

अवकहडा चक्र

पाया (राशि आधारित)	लोह
वर्ण	वैश्य
योनी	सर्प
गण	देव
वश्य	चतुष्पद
नाड़ी	मध्य
दशा भोग्य	Mar 4 Y 10 M 7 D
लग्न	तुला
लग्न स्वामी	शुक्र
राशि	वृषभ
राशि स्वामी	शुक्र
नक्षत्र-पद	मृगशिरा 2
नक्षत्र स्वामी	मंगल
जुलियन दिन	2456780
सूर्य राशि (हिन्दू)	मेष
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृषभ
अयनांश	024.03.24
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.15
साम्पातिक काल	09.28.24

व्यक्ति विवरण

लिंग	Male
दिनांक	2 : 5 : 2014
समय	19 : 10 : 0
दिन	शुक्रवार
इष्टकाल	033-33-15
जन्म स्थान	Gangapur
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	26 : 28 : N
रेखांश	76 : 43 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:23:07
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	18:46:52
जन्म समय - जीएमटी	13:40:0
तिथि	चर्तुथी
हिन्दू दिन	शुक्रवार
पक्ष	शुक्ल
योग	अतिगण्ड
करण	वणिज
सूर्योदय	05:44:41
सूर्यास्त	18:55:35
दिन अवधि	13:10:53

घटक (अशुभ)

दिन	शनिवार
करण	शकुनि
लग्न	वृष
माह	मार्गशीर्ष
नक्षत्र	हस्त
प्रहर	4
राशि	कन्या
तिथि	5, 10, 15
योग	सुकर्मन
ग्रह	गुरु, मंगल

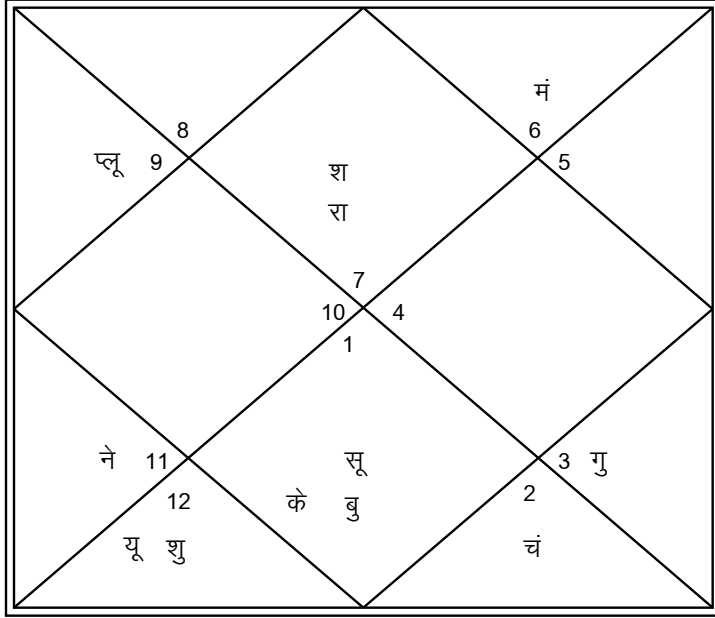
अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	8
शुभ अंक	1, 3, 7, 9
अशुभ अंक	5, 8
शुभ वर्ष	17, 26, 35, 44, 53
भाग्यशाली दिन	शनि, बुध, सूर्य
शुभ ग्रह	शनि, बुध, सूर्य
मित्र राशियां	कन्या मकर कुम्भ
शुभ लग्न	सिंह वृश्चिक मकर मीन
भाग्यशाली धातु	रजत
भाग्यशाली रत्न	हीरा

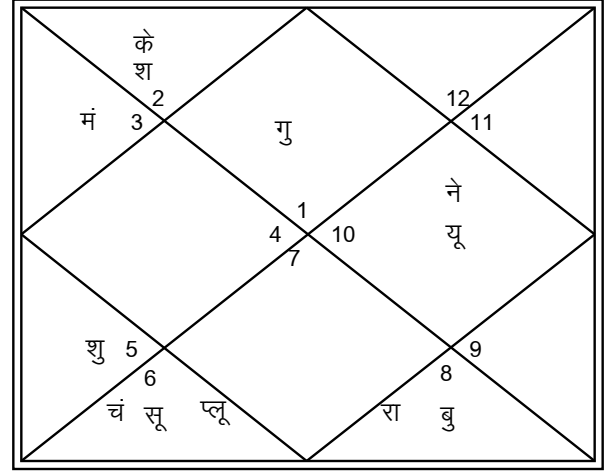
पारम्परिक

नाम	Viswraj Singh	जुलियन दिन	2456780	लग्न स्वामी	शुक्र	दशा भोग्य	Mar 4 Y 10 M 7 D
लिंग	Male	अयनांश नाम	लाहिरी	लग्न	तुला	करण	वणिज
दिनांक	2.5.2014	अयनांश	024.03.24	योग	अतिगण्ड	नक्षत्र स्वामी	मंगल
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Gangapur	तिथि	चतुर्थी	नक्षत्र-पद	मृगशिरा-2
समय	19.10.0	रेखांश	76.43.E	सूर्यास्त	18.55.35	राशि स्वामी	शुक्र
साम्पातिक काल	09.28.24	अक्षांश	26.28.N	सूर्योदय	05.44.41	राशि	वृषभ

लग्न चक्र



नवमांश चक्र



विंशोत्तरी दशा

मंगल -7 वर्ष	
2/ 5/14 से	10/ 3/19
मंगल	00/00/00
राहु	00/00/00
गुरु	1/8/14
शनि	10/9/15
बुध	7/9/16
केतु	4/2/17
शुक्र	4/4/18
सूर्य	10/8/18
चंद्र	10/3/19

राहु -18 वर्ष	
10/ 3/19 से	10/ 3/37
राहु	22/11/21
गुरु	16/4/24
शनि	22/2/27
बुध	10/9/29
केतु	28/9/30
शुक्र	28/9/33
सूर्य	22/8/34
चंद्र	22/2/36
मंगल	10/3/37

गुरु -16 वर्ष	
10/ 3/37 से	10/ 3/53
गुरु	28/4/39
शनि	10/11/41
बुध	16/2/44
केतु	22/1/45
शुक्र	22/9/47
सूर्य	10/7/48
चंद्र	10/11/49
मंगल	16/10/50
राहु	10/3/53

शनि -19 वर्ष	
10/ 3/53 से	10/ 3/72
शनि	13/3/56
बुध	22/11/58
केतु	1/1/60
शुक्र	1/3/63
सूर्य	13/2/64
चंद्र	13/9/65
मंगल	22/10/66
राहु	28/8/69
गुरु	10/3/72

बुध -17 वर्ष	
10/ 3/72 से	10/ 3/89
बुध	7/8/74
केतु	4/8/75
शुक्र	4/6/78
सूर्य	10/4/79
चंद्र	10/9/80
मंगल	7/9/81
राहु	25/3/84
गुरु	1/7/86
शनि	10/3/89

केतु -7 वर्ष	
10/ 3/89 से	10/ 3/96
केतु	7/8/89
शुक्र	7/10/90
सूर्य	13/2/91
चंद्र	13/9/91
मंगल	10/2/92
राहु	28/2/93
गुरु	4/2/94
शनि	13/3/95
बुध	10/3/96

शुक्र -20 वर्ष	
10/ 3/96 से	10/ 3/16
शुक्र	10/7/99
सूर्य	10/7/00
चंद्र	10/3/02
मंगल	10/5/03
राहु	10/5/06
गुरु	10/1/09
शनि	10/3/12
बुध	10/1/15
केतु	10/3/16

सूर्य -6 वर्ष	
10/ 3/16 से	10/ 3/22
सूर्य	28/6/16
चंद्र	28/12/16
मंगल	4/5/17
राहु	28/3/18
गुरु	16/1/19
शनि	28/12/19
बुध	4/11/20
केतु	10/3/21
शुक्र	10/3/22

चंद्र -10 वर्ष	
10/ 3/22 से	10/ 3/32
चंद्र	10/1/23
मंगल	10/8/23
राहु	10/2/25
गुरु	10/6/26
शनि	10/1/28
बुध	10/6/29
केतु	10/1/30
शुक्र	10/9/31
सूर्य	10/3/32

ग्रह स्थिति				
ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	तुला	21.57.39	विशाखा	1
सूर्य	मेष	18.01.47	भरणी	2
चंद्र	वृषभ	27.25.20	मृगशिरा	2
मंगल (व)	कन्या	17.02.12	हस्त	3
बुध	मेष	25.33.42	भरणी	4
गुरु	मिथुन	21.07.23	पुनर्वसु	1
शुक्र	मीन	05.23.57	उ०भाद्रपद	1
शनि (व)	तुला	26.33.44	विशाखा	2
राहु (व)	तुला	03.45.57	चित्रा	4
केतु (व)	मेष	03.45.57	अश्विनी	2
यूरे	मीन	20.10.27	रेवती	2
नेप	कुंभ	13.04.46	शतभिषा	2
प्लू (व)	धनु	19.18.18	पूर्वाषाढा	2

अष्टकवर्ग तालिका												
राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	4	3	3	5	4	4	5	3	4	4	5	4
चंद्र	2	4	5	5	3	3	4	5	4	5	5	4
मंगल	3	2	4	4	5	3	5	1	2	3	3	4
बुध	5	5	5	4	5	3	5	4	4	5	3	6
गुरु	6	2	5	6	4	5	3	4	6	6	4	5
शुक्र	3	5	5	4	5	2	3	4	5	6	6	4
शनि	2	2	1	4	4	1	4	4	3	5	5	4
योग	25	23	28	32	30	21	29	25	28	34	31	31

चलित तालिका				
भाव	राशि	भाव आरंभ	राशि	भाव मध्य
1	तुला	07.34.22	तुला	21.57.39
2	वृश्चिक	07.34.22	वृश्चिक	23.11.05
3	धनु	08.47.48	धनु	24.24.31
4	मकर	10.01.15	मकर	25.37.58
5	कुंभ	10.01.15	कुंभ	24.24.31
6	मीन	08.47.48	मीन	23.11.05
7	मेष	07.34.22	मेष	21.57.39
8	वृषभ	07.34.22	वृषभ	23.11.05
9	मिथुन	08.47.48	मिथुन	24.24.31
10	कर्क	10.01.15	कर्क	25.37.58
11	सिंह	10.01.15	सिंह	24.24.31
12	कन्या	08.47.48	कन्या	23.11.05

॥ आपका लग्न ॥

लग्न क्या है —

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पडती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **तुला**

स्वास्थ्य तुला लग्न के लिए:

तुला राशि के अधिकांश लोगों में संवेदनशील त्वचा पाई जाती है जो अनिद्रा, अच्छे भोजन भोजन और शराब के अत्यधिक सेवन के कारण होती हैं। इस राशि वालों के लोगों में पीठ के निचले हिस्से और अंडाशय के निचले हिस्से में दर्द, और बहुत अधिक जैसी समस्याएं होती हैं जो अत्यधिक श्वकर और भारी भोजन के कारण होता है।

स्वभाव व व्यक्तित्व तुला लग्न के लिए:

तुला लग्न लोगों सहयोग और समझौता करने में रुचि रखते हैं और उन्हें जब लगता है कि यह सही है तो वे बिना बहस के उसे स्वीकार करना भी पसंद करते हैं। दूसरों से असहमति से उनमें असुरक्षा की भावना पैदा हो जाती है। वे जिंदगी में सदभावना के लिए लालायित रहते हैं और उसके लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। इस राशि के लोग अविश्वासी, संकोची, दिनचर्या के प्रति असहज, रूढ़िवादी और शर्मीले स्वभाव के होते हैं। उनमें जल्द क्रोध नहीं आता लेकिन वे जल्द उग्र होने की संभावना प्रबल होती है। वे यथार्थवाद के बजाय आदर्शवादी होते हैं और कभी— कभी ऐसी योजना बनाते हैं जो हवा में महल बनाने के समान होता है। क्या सही है और क्या गलत इसके बारे में ऐसे लोगों की राय बिल्कुल स्पष्ट होती है। तुला लग्न के लोग आम तौर पर शांतिप्रिय प्रकृति के हैं और किसी काम को आसान तरीके से करने वाले माना जाता है। वे देखने में आकर्षक होते हैं। वे बहुत सामाजिक प्रवृत्ति के होते हैं जिससे उन्हें काफी खुशी मिलती है।

शारीरिक रूप—रंग तुला लग्न के लिए:

तुला लग्न लोग विविध और विशिष्ट होते हैं, उनकी शारीरिक बनावट खासकर होंठ और ललाट से आत्मविश्वास दिखता है। इनके बारे में आम धारणा होती है कि ये कम ऊंचाई वाले होते हैं, और काफी चालाक प्रवृत्ति के होते हैं। इस राशि की महिलाएं काफी आकर्षक होती हैं जबकि पुरुष भी काफी जोशीले होते हैं। इस राशि के लोगों की ऊंचाई औसत या इससे अधिक होती है।

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

चरित्र:

आप सौन्दर्य—प्रेमी हैं, चाहे वह कला, दर्शनीयस्थल या आकर्षक व्यक्ति ही क्यों न हो। आप केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं, अपितु आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति भी आकर्षित होते हैं। अच्छा संगीत आपको पसन्द आता है, किसी व्यक्ति का सच्चरित्र आपको पसन्द आता है। आप सामान्य से ऊपरप्रत्येक वस्तुओं के पारखी हैं। दूसरों को खुश करने की आपके अन्दर नैसर्गिक क्षमता है। आप परेशान लोगों को सान्त्वना देना अच्छी तरह से जानते हैं और आप जानते हैं कि लोगों को अपने आप से खुश कैसे रखा जाये। यह एक विरला गुण है एवं इस कारण संसार में आप जैसे व्यक्ति कम ही हैं। आप अन्य लोगों जितने व्यावहारिक नहीं हैं और आप समय के भी पाबन्द नहीं हैं। आप आवश्यकता से अधिक संवेदनशील और जोकि आपको कभी—कभी परेशानी में डाल देती है परन्तु आपकी खिन्नता लड़ाई—झगड़े के रूप में बाहर नहीं आती है। असामंजस्य से आप हर कीमत पर दूर रहते हैं। सम्भवतः आप अपने मन से दुःख को दूर रखते हैं।

सौभाग्य व संतुष्टि:

आप साहसी व्यक्ति हैं। आप इतने आवेगपूर्ण हैं कि आपके पास भय और चिन्ता के लिये कोई समय नहीं है। इस तरह की समय—समय पर होने वाली घटनाएं आपको अन्तर्ज्ञान प्रदान करती हैं। आपका व्यक्तित्व रुचिपूर्ण होने के कारण लोग आपका साथ पसन्द करते हैं। आप एक उत्तम व्यक्तित्व—वाचक व प्राच्य विद्याओं की ओर आकर्षित हैं, जो आपको जीवन को गहराई से समझने में सहायता करता है। आपकी यह असाधारण दूरदृष्टि आपको आगे बढ़ने में एवं आपकी सफलता में बाधक कारणों को समझने में आपकी सहायता करती है।

जीवन शैली:

आप अपने वैवाहिक जीवन के आनन्द को सदैव ही बढ़ाना चाहते हैं। यदि बाह्य तथ्यों से आपको यह लगता है कि भौतिक सम्पन्नता जीवन के लिये नितान्त आवश्यक है, तो आप उसे प्राप्त करने के लिये पूर्ण प्रयास करते हैं। आपका लक्ष्य चाहे कुछ भी हो, काम आपके लिये प्रेरणा का काम करता है। इसे जानते हुए, न कि इसका विरोध करते हुए इसका ठीक इस्तेमाल करें।

रत्न



रुद्राक्ष



मूर्तियां



पुस्तकें



जड़ी



परामर्श



एस्ट्रोसेज शॉप

हमसे संपर्क करें

+91 9560670006

+91 9911840126

+91 1204138503

वेब

www.AstroSage.com

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रोजगार:

क्योंकि आप जीवन की प्रत्येक घटना के प्रति समवेदनशील हैं, आप कम झंझट और दबाव वाला काम पसन्द करते हैं। जीवन में कार्यक्षेत्र के चयन के लिये आप अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ सुनें और उसी दिशा में कार्य करें।

व्यवसाय:

आप ऐसे किसी कार्य से प्रसन्न नहीं रहेंगे जो नीरस और सुरक्षित हो। जब तक कि आपका कार्य आपके लिये नित नई परेशानियाँ सुलझाने के लिये नहीं लाता, आप संतुष्ट नहीं होंगे। परन्तु ऐसा कुछ भी जिसमें खतरे का थोड़ा सा तड़का हो वह आपको और अधिक प्रसन्न करेगा। सर्जन, कन्सल्टेशन इंजीनियर और उच्चतर प्रबन्धन आदि, इस तरह के कार्यक्षेत्र के कुछ उदाहरण हैं। सर्जन का कार्य आपको इसलिये आकर्षित करता है क्योंकि लोगों की जिन्दगियाँ व आपकी स्वयं की प्रतिष्ठा आपके कार्य पर हमेशा ही निर्भर करती हैं। एक कन्सल्टेशन इंजीनियर को हमेशा ही निर्माण सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हमारे कहने का आश्रय यह है कि ऐसा कोई कार्य जिसमें अत्यधिक क्षमता की ज़रूरत हो व हमेशा खतरों की सम्भावना हो।

स्वास्थ्य:

स्वास्थ्य के बारे में आपको चिन्ता करने की कोई भी ज़रूरत नहीं है। हाँलाकि आपकी शारीरिक-संरचना आदर्श नहीं है, परन्तु इसमें कोई बड़ी समस्या भी नहीं है। लेकिन आपको ध्यान देन की आवश्यकता है। फेंफड़े आपके दुर्बलतम अंग हैं, पर स्नायु भी आपको परेशानी दे सकते हैं। आप सिरदर्द एवं माइग्रेन से पीड़ित हो सकते हैं। जितना सम्भव हो प्राकृतिक जीवन जिएं, खुली हवा का आनन्द लें और अपने खान-पान का ध्यान रखें।



ज्योतिषीय
सॉफ्टवेयर



कुंडली
मिलान



एस्ट्रोसेज
टीवी



एस्ट्रोसेज
ऑप



मोबाइल
एप

उत्पाद
और
सेवाएँ

हमसे संपर्क करें :

नॉएडा ऑफिस : A-139 SEC-63 Noida, U.P

दूरभाष नंबर : +91 9560670006

+91 9911840093

वेब : www.AstroSage.com



एस्ट्रोसेज
पत्रिका



लाल
किताब



सम्पूर्ण-जीवन
फलादेश



क्षेत्रीय
भाषाएँ

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रुचि:

आपकी अभिरुचियां एवं समय काटने के साधन थकावटभरे हैं। क्रिकेट, फुटबॉल और टेनिस आदि आपके पसन्द के खेल हैं। आप पूरे दिनकठोर परिश्रम करते हैं और शाम को टेनिस, गोल्फ, बैडमिंटन जैसे खेल खेलते हैं। आपकी एथलेटिक खेलों में भाग लेने में विशेष रुचि है। सम्भवतः आपने खेलों में कई पुरस्कार जीते होंगे। जहां तक कि खेलों का प्रश्न है, आपकी जीवन-ऊर्जा आश्चर्यजनक है।

प्रेम आदि:

आप प्रेम को बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। वस्तुतः, आप इसे पाने का प्रयास इस तरह करते हैं, कि आपका प्रिय उससे भयभीत हो सकता है। एकबार प्रेम की निर्बाध धारा प्रवाहित होना प्रारम्भ हो जाए, आप दर्शाते हैं कि आपका लगाव गहरा व वास्तविक है। आप एक सहानुभूतिपूर्ण जीवनसाथी हैं और जिससे आप विवाह करेंगे, वह आपका अखण्ड प्रेम प्राप्त करेगा। हांलाकि आप उससे यह उम्मीद करते हैं कि वह आपकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुने, परन्तु आपके अन्दर दूसरों की बात को ध्यान से सुनने का धैर्य नहीं है।

वित्त:

आप अपने व्यावसायिक भागीदारों के सम्बन्ध में भाग्यशाली नहीं रहेंगे। आप अपने भविष्य को स्वतः ही बनाएंगे एवं आपको दूसरों से अधिक सहायता नहीं मिलेगी। लेकिन आपकी असफलता का कोई कारण प्रतीत नहीं होता और यहां तक कि आप पैसे वाले होंगे। आर्थिक मामलों में आपका तीक्ष्ण दिमाग आपको कई सुअवसर दिलवाएगा। कभी-कभी आप अत्यन्त धनवान होंगे और कभी इसके विपरीत होगा। जब आपके पास धन होगा, तो आप खर्चीले स्वभाव के होंगे और जब नहीं होगा तो आप उस परिस्थिति के अनुकूल हो जाएंगे। वस्तुतः, आप स्वाभाविक तौर पर लोगों को व परिस्थितियों को शीघ्र स्वीकारकर लेते हैं, जो कि खतरनाक है। अगर आप इस बात का ध्यान रखेंगे, तो आप किसी भी उद्योग या व्यापार में सफल होंगे।

रत्न



रुद्राक्ष



मूर्तियां



पुस्तकें



जड़ी



परामर्श



एस्ट्रोसेज शॉप

हमसे संपर्क करें +91 9560670006
+91 9911840126
+91 1204138503
वेब www.AstroSage.com

॥ मंगलदोष विवेचन ॥

सामान्यतः मंगल दोष जन्म-कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से द्वादश भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से पंचम भाव में है।

अतः मंगल दोष लग्न कुण्डली में उपस्थित है और चंद्र कुण्डली में उपस्थित नहीं है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खड़ी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

- 1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
- 2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

- 1) चिड़ियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
- 2) घर पर हाथी-दांत रखें।
- 3) बरगद के पेड़ की पूजा मीठे दूध से करें

नोट: हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।



ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर



कुंडली मिलान



एस्ट्रोसेज टीवी



एस्ट्रोसेज ऑप



मोबाइल एप



एस्ट्रोसेज पत्रिका



लाल किताब



सम्पूर्ण-जीवन फलादेश



क्षेत्रीय भाषाएँ

उत्पाद और सेवाएँ

हमसे संपर्क करें :

नॉएडा ऑफिस : A-139 SEC-63 Noida,U.P

दूरभाष नंबर : +91 9560670006
+91 9911840093

वेब : www.AstroSage.com

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

नाम	Viswraj Singh
दिनांक	2/5/2014
समय	19:10:0
जन्म स्थान	Gangapur
लिंग	Male
राशि	वृषभ
तिथि	चतु थी
नक्षत्र	मृगशिरा

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 27, 2017	जून 20, 2017	
2	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 27, 2017	जनवरी 23, 2020	
3	साढे साती	मेष	जून 03, 2027	अक्टूबर 19, 2027	उदय
4	साढे साती	मेष	फरवरी 24, 2028	अगस्त 07, 2029	उदय
5	साढे साती	वृषभ	अगस्त 08, 2029	अक्टूबर 05, 2029	शिखर
6	साढे साती	मेष	अक्टूबर 06, 2029	अप्रैल 16, 2030	उदय
7	साढे साती	वृषभ	अप्रैल 17, 2030	मई 30, 2032	शिखर
8	साढे साती	मिथुन	मई 31, 2032	जुलाई 12, 2034	अस्त
9	छोटी पनौती	सिंह	अगस्त 28, 2036	अक्टूबर 22, 2038	
10	छोटी पनौती	सिंह	अप्रैल 06, 2039	जुलाई 12, 2039	
11	छोटी पनौती	धनु	दिसम्बर 08, 2046	मार्च 06, 2049	

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	छोटी पनौती	धनु	जुलाई 10, 2049	दिसम्बर 03, 2049	
13	साढे साती	मेष	अप्रैल 07, 2057	मई 27, 2059	उदय
14	साढे साती	वृशभ	मई 28, 2059	जुलाई 10, 2061	शिखर
15	साढे साती	मिथुन	जुलाई 11, 2061	फरवरी 13, 2062	अस्त
16	साढे साती	वृशभ	फरवरी 14, 2062	मार्च 06, 2062	शिखर
17	साढे साती	मिथुन	मार्च 07, 2062	अगस्त 23, 2063	अस्त
18	साढे साती	मिथुन	फरवरी 06, 2064	मई 09, 2064	अस्त
19	छोटी पनौती	सिंह	अक्टूबर 13, 2065	फरवरी 03, 2066	
20	छोटी पनौती	सिंह	जुलाई 03, 2066	अगस्त 29, 2068	
21	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 17, 2076	जुलाई 10, 2076	
22	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 12, 2076	जनवरी 14, 2079	
23	साढे साती	मेष	मई 22, 2086	नवम्बर 09, 2086	उदय
24	साढे साती	मेष	फरवरी 08, 2087	जुलाई 17, 2088	उदय
25	साढे साती	वृशभ	जुलाई 18, 2088	अक्टूबर 30, 2088	शिखर
26	साढे साती	मेष	अक्टूबर 31, 2088	अप्रैल 05, 2089	उदय
27	साढे साती	वृशभ	अप्रैल 06, 2089	सितम्बर 18, 2090	शिखर
28	साढे साती	मिथुन	सितम्बर 19, 2090	अक्टूबर 24, 2090	अस्त
29	साढे साती	वृशभ	अक्टूबर 25, 2090	मई 20, 2091	शिखर

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढ़े साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	साढ़े साती	मिथुन	मई 21, 2091	जुलाई 02, 2093	अस्त
31	छोटी पनौती	सिंह	अगस्त 19, 2095	अक्टूबर 11, 2097	
32	छोटी पनौती	सिंह	मई 03, 2098	जून 19, 2098	
33	छोटी पनौती	धनु	नवम्बर 30, 2105	फरवरी 24, 2108	
34	छोटी पनौती	धनु	जुलाई 29, 2108	नवम्बर 22, 2108	
35	साढ़े साती	मेष	मार्च 30, 2116	मई 18, 2118	उदय
36	साढ़े साती	वृश्च	मई 19, 2118	जुलाई 01, 2120	शिखर
37	साढ़े साती	मिथुन	जुलाई 02, 2120	अगस्त 13, 2122	अस्त
38	साढ़े साती	मिथुन	मार्च 09, 2123	अप्रैल 15, 2123	अस्त
39	छोटी पनौती	सिंह	सितम्बर 30, 2124	फरवरी 25, 2125	
40	छोटी पनौती	सिंह	जून 20, 2125	दिसम्बर 07, 2126	
41	छोटी पनौती	सिंह	फरवरी 05, 2127	अगस्त 21, 2127	

 **एस्ट्रोसेज शॉप**

हमसे संपर्क करें +91 9560670006
+91 9911840126
+91 1204138503
वेब www.AstroSage.com

रत्न



पुस्तकें



रुद्राक्ष



जड़ी



मूर्तियां



परामर्श



॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

शनि साढ़े साती: उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बड़े आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कड़ी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढ़े साती: शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य-संबंधी समस्या, चरित्र-हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा-तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। संभव है कि इस काल-खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घड़ी से निकाल सकता है।

शनि साढ़े साती: अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई-लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे-धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल-खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली-भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोट: उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

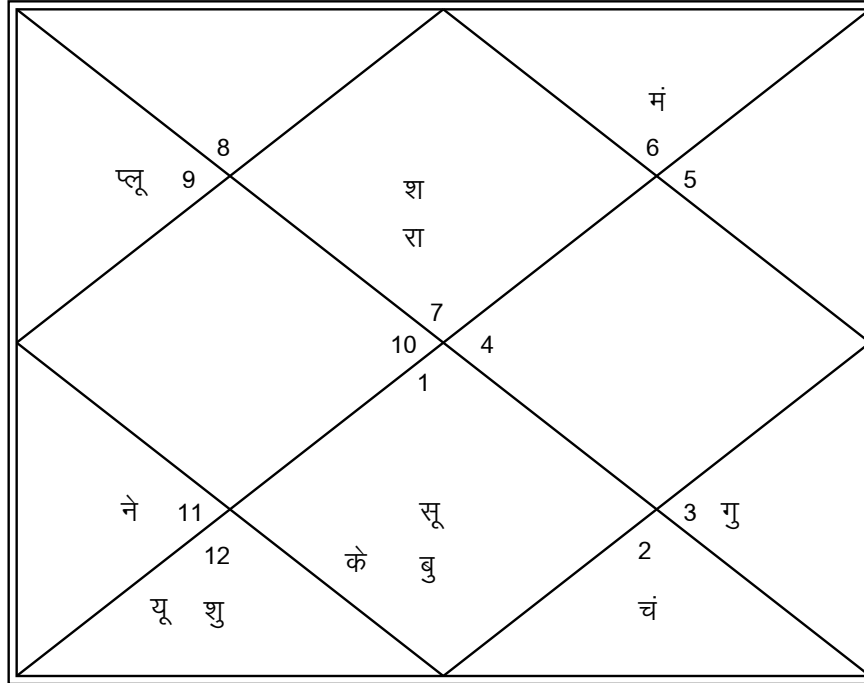
॥ कालसर्प दोष ॥

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थिति को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर है। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतः मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग-अलग जातकों पर अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पड़ता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन-किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषयोग का असर पड़ता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणाम: आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

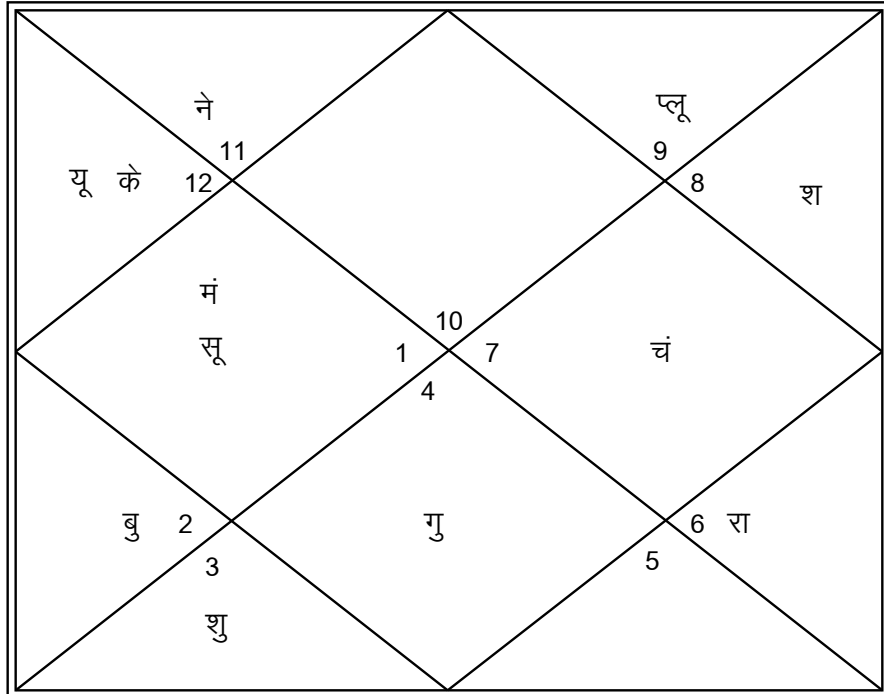
लग्न चक्र:



॥ वर्षफल विवरण ॥

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
2 / 5 / 2014	जन्म दिनांक	3 / 5 / 2015
19:10:0	जन्म समय	1:19:10
शुक्रवार	जन्म दिन	शनिवार
Gangapur	जन्म स्थान	Gangapur
26	अक्षांश	26
76	रेखांश	76
00 : 23 : 07	स्थानीय समय संशोधन	00 : 23 : 07
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 46 : 52	स्थानीय औसत समय	00 : 56 : 02
05 : 44 : 41	सूर्योदय	05 : 44 : 07
18 : 55 : 35	सूर्यास्त	18 : 56 : 00
तुला	लग्न	मकर
शुक्र	लग्नस्वामी	शनि
वृषभ	राशि	तुला
शुक्र	राशि स्वामी	शुक्र
मृगशिरा	नक्षत्र	चित्रा
मंगल	नक्षत्र स्वामी	मंगल
अतिगण्ड	योग	सिंह
वणिज	करण	वणिज
वृषभ	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	वृषभ
024-03-24	अयनांश	024-04-14
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली



॥ वर्षफल विवरण ॥

मुन्था: 11 भाव

आप बेहतर स्वास्थ्य, लोकप्रियता, मित्रता व सुखद पारिवारिक जीवन का आनंद लेंगे। आपको उच्च प्रशासनिक अथवा राजकीय पदों से सहयोग मिलेगा। आपकी इच्छाओं की पूर्ति होगी और आपकी समस्याओं का अंत होगा।

मई 3, 2015 – जून 26, 2015 दशा राहू

राहू भाव संख्या 9

इस अवधि में आपको मिले जुले फल मिलेंगे। वैसे आप अपने व्यवसाय/व्यापार में अच्छा काम करेंगे। आप अपने लक्ष्य से भ्रमित नहीं होंगे और एक बार हाथ में लेने के बाद काम छोड़ेंगे नहीं। आपका निश्चय दृढ़ रहेगा। लेकिन गुरुजनों और माता पिता से संबंध बहुत अच्छे नहीं रहेंगे। कभी कभी आप तर्क बुद्धि से इतना काम लेंगे कि मामले की तह तक ही न पहुंच पायेंगे। आपके व्यक्तित्व में अहंकार का प्रवेश हो जायेगा। आपके इस बर्ताव से आप जनप्रिय नहीं रह पायेंगे। अपनी अर्न्तदृष्टि से अपने आप को जांचने परखने का प्रयत्न करें।

जून 26, 2015 – अगस्त 14, 2015 दशा गुरु

गुरु भाव संख्या 7

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

अगस्त 14, 2015 – अक्टूबर 11, 2015 दशा शनि

शनि भाव संख्या 11

इस अवधि में आपकी सारी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप नए उद्यम शुरू करेंगे। मित्रों और हितैषियों से खूब मदद मिलेगी। इस अवधि में व्यापार द्वारा आपको अच्छा खासा लाभ होना चाहिए। निकट संबंधी के बारे में कोई अच्छी खबर मिल सकती है। सुदूर प्रदेशों के निवासियों से आपके अच्छे संबंध कायम होंगे। भ्रमण उपयोगी रहेगा। प्रणय संबंधों के लिए भी यह समय अच्छा है। परिवारजनों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा रहेगा।

अक्टूबर 11, 2015 – दिसम्बर 01, 2015 दशा बुध

बुध भाव संख्या 5

इस अवधि में अपनी पैनी विवेक बुद्धि और सही अंदाज लगाने की क्षमता के कारण आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी कल्पना अत्यधिक सक्रिय रहेगी। नये उद्यमों में निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे। यह समय प्रणय और रोमान्स के लिये भी अच्छा है। आपके सृजन बोध की सराहना की जायेगी। पारिवारिक सुख बढ़ा चढ़ा रहेगा। मित्र और शुभ चिन्तक पूरा सहारा देंगे। इस अवधि के दौरान आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। एक यादगार यात्रा होने की भी संभावना है।

॥ वर्षफल विवरण ॥

दिसम्बर 01, 2015 – दिसम्बर 23, 2015 दशा केतु

केतु भाव संख्या 3

आप अपने काम बुद्धिमानी से नहीं निपटायेंगे। वैसे इस पूरी अवधि में आप आशावादी रहेंगे। संचार द्वारा प्राप्त समाचार से लाभान्वित होंगे। अचानक यात्रा करने से भी अच्छे फल निकलेंगे। आमदनी में इजाफा होगा। पारिवारिक जीवन पर राहतकारी प्रभाव पड़ेगा। अगर पदोन्नति होने वाली है तो जैसी आप चाहेंगे वैसी ही होगी। मित्र मंडली बढ़ेगी। दिमाग का अध्यात्म के प्रति झुकाव बढ़ेगा। वास्तव में यह आपके लिये एक सौभाग्यशाली समय है।

दिसम्बर 23, 2015 – फरवरी 22, 2016 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 6

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

फरवरी 22, 2016 – मार्च 11, 2016 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 4

इस अवधि में आपको मेहनत करनी पड़ेगी जो आप कर नहीं पायेंगे। लगातार किया गया कड़ा परिश्रम थका भी शीघ्र देगा और कार्य क्षमता भी कम हो जायेगी। बुरे कार्यों में प्रवृत्ति रहने की आपकी चेष्टा रहेगी। मां बाप का बुरा स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा। कार या कोईवाहन बहुत तेजी से न चलाएं।

मार्च 11, 2016 – अप्रैल 10, 2016 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 10

आप अपने ही विचारों और योजनाओं को रचनात्मक रूप दे सकेंगे। नौकरी या व्यापार से संबंधित कुछ ठोस परिणाम सामने आयेंगे। आपको सारे ही उद्यमों में सफलता निश्चित है। अपने से वरिष्ठ लोगों या पर्यवेक्षकों के साथ अति मधुर संबंध रहेंगे। इस समय का पूरा सदुपयोग कीजिये।

अप्रैल 10, 2016 – मई 02, 2016 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 4

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चारों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पत्ति, वाहन सुख एवम् स्त्रियों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

मंगल महादशा फल (जन्म से मार्च 10, 2019)

मंगल कन्या राशि आपके द्वादश भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपको कई प्रतिकूल परिस्थितियों और परेशानियों का सामना करना पड़ेगा और इस कारण दुख उठाएंगे। कुछ दुख इसलिये भी बढ़ेंगे कि आप झुकना नहीं जानते और अपने घमण्ड के कारण परिस्थितियों को और खराब करेंगे। स्वास्थ्य से भी परेशान रहेंगे। खर्चा बढ़ता ही जायेगा। यद्यपि साथी के स्वास्थ्य में सुधार के लक्षण दिखाई पड़ेंगे। परन्तु पूर्ण सुधार में समय लगेगा। आपकी मानसिक शांति भंग रहेगी।

राहू महादशा फल (मार्च 10, 2019 से मार्च 10, 2037)

राहू तुला राशि आपके प्रथम भाव में स्थित है:

उल्टी सीधी तरह से काम करने की आपकी प्रवृत्ति होगी। किसी भ्रम में न रहें। इस अवधि में आपको डर सताता रहेगा। आपके अपने लोग बार बार आपको धोखा देंगे। जल्दबाजी या हड़बड़ी से कोई फायदा नहीं होगा। स्त्री वर्ग से आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे। शीघ्र पैसा बनाने के तरीकों पर अच्छी तरह सोच विचार कर अमल करें। तथ्यजीवी रहें स्मृतिजीवी नहीं। किसी गुप्त रोग के कारण आप परेशान रह सकते हैं।

गुरु महादशा फल (मार्च 10, 2037 से मार्च 10, 2053)

गुरु मिथुन राशि आपके नवम भाव में स्थित है:

इस वर्ष यह अवधि आपके लिये सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होगी। आप प्रचुर सफलता और सम्मान प्राप्त करेंगे। इस अवधि का उपयोग आप मन को एकाग्र करने समाधि और योग क्रियाओं को करने के लिए भी कर सकते हैं। धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र के किसी मुखिया से भी आपका सम्पर्क हो सकता है। अपने काम को पूरा करने के लिये आप में प्रचुर उत्साह और विश्वास रहेगा। पारिवारिक माहौल से भी सहारा मिलेगा। लम्बी यात्रा सफलदायक सिद्ध होगी। परिवार में नये सदस्य की बढोत्तरी होगी।

शनि महादशा फल (मार्च 10, 2053 से मार्च 10, 2072)

शनि तुला राशि आपके प्रथम भाव में स्थित है:

आपके हर काम में अड़चनें आएंगी और देरी होगी। कभी कभी असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे। काम का बोझ बहुत रहेगा और फालतू के कामों में भी आप फंसे रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहेगा। रिश्तेदारों के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। भागीदारों या सहयोगियों की लापरवाही के कारण आपको धक्का पहुंच सकता है। वैसे इस अवधि का आखिरी हिस्सा आपको कुछ राहत देगा। आशावादी होना निराशावादी होने से सदैव अच्छा है।

बुध महादशा फल (मार्च 10, 2072 से मार्च 10, 2089)

बुध मेष राशि आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि एवम् सम्मान में इजाफा होगा। विद्वानों के साथ रहने का मौका आयेगा। आपका व्यापार या व्यवसाय बढेगा और चमकेगा। स्त्री वर्ग से आपके क्षेत्र में सहायता मिलेगी। सुखद यात्रा की भी संभावना है। लाभप्रद सौदा करेंगे और आपके भागीदार व सहयोगी आपको अपना बेहतर सहयोग देंगे। किसी प्रतिस्पर्धा में भी सफल रहना निश्चित है।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

केतु महादशा फल (मार्च 10, 2189 से मार्च 10, 2196)

केतु मेष राशि आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि के दौरान आपको मिले जुले फल मिलेंगे। अचानक भाग्य चमकेगा। आपका सामाजिक क्षेत्र विकसित होगा। प्रणय और प्रेम के लिये यह समय अच्छा नहीं है। प्रेमिका से झगड़े और विवाद होने की पूरी संभावना है। खर्च भी अचानक बहुत बढ़ जायेगा। भ्रमण से कोई विशेष लाभ नहीं होने वाला। जोखिम भरे कामों में फंसने की संभावना है। शायद जोखिम उठाने के लिये यह उपयुक्त समय नहीं है। छोटी मोटी बीमारियां भी लगी रह सकती हैं।

शुक्र महादशा फल (मार्च 10, 2196 से मार्च 10, 2216)

शुक्र मीन राशि आपके षष्ठ भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

सूर्य महादशा फल (मार्च 10, 2316 से मार्च 10, 2322)

सूर्य मेष राशि आपके सप्तम भाव में स्थित है:

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्यायें पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियां झेलनी पड़ सकती हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

चन्द्र महादशा फल (मार्च 10, 2322 से मार्च 10, 2332)

चन्द्र वृषभ राशि आपके अष्टम भाव में स्थित है:

अपने प्रयत्नों में आपको निराशा मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां भी रहेंगी। अपने आपको किसी बड़े उद्यम से सम्बद्ध न कीजिये। यह जोखिम लेने का समय नहीं है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित रह सकते हैं। फालतु की यात्राओं से बचें।

॥ योगिनी दशा ॥

सं	8 वर्ष
आरम्भ	29. 7.13
अंत	19.11.19
सं	29. 7.13
मं	19.10.13
पिं	29. 3.14
ध	29.11.14
भ्र	19.10.15
भद्रि	29.11.16
उल्	31. 3.18
सि	19.11.19

मं	1 वर्ष
आरम्भ	19.11.19
अंत	19.11.20
मं	31.10.19
पिं	20.11.19
ध	20.12.19
भ्र	30. 1.20
भद्रि	21. 3.20
उल्	21. 5.20
सि	31. 7.20
सं	19.11.20

पिं	2 वर्ष
आरम्भ	19.11.20
अंत	19.11.22
पिं	1.12.20
ध	1. 2.21
भ्र	21. 4.21
भद्रि	31. 7.21
उल्	1.12.21
सि	21. 4.22
सं	1.10.22
मं	19.11.22

ध	3 वर्ष
आरम्भ	19.11.22
अंत	19.11.25
ध	21. 1.23
भ्र	21. 5.23
भद्रि	21.10.23
उल्	21. 4.24
सि	20.11.24
सं	20. 7.25
मं	20. 8.25
पिं	19.11.25

भ्र	4 वर्ष
आरम्भ	19.11.25
अंत	19.11.29
भ्र	30. 3.26
भद्रि	20.10.26
उल्	20. 6.27
सि	30. 3.28
सं	19. 2.29
मं	29. 3.29
पिं	18. 6.29
ध	19.11.29

भद्रि	5 वर्ष
आरम्भ	19.11.29
अंत	19.11.34
भद्रि	28. 6.30
उल्	28. 4.31
सि	17. 4.32
सं	27. 5.33
मं	17. 7.33
पिं	27.10.33
ध	27. 3.34
भ्र	19.11.34

उल्	6 वर्ष
आरम्भ	19.11.34
अंत	19.11.40
उल्	17.10.35
सि	17.12.36
सं	16. 4.38
मं	16. 6.38
पिं	16.10.38
ध	16. 4.39
भ्र	16.12.39
भद्रि	19.11.40

सि	7 वर्ष
आरम्भ	19.11.40
अंत	19.11.47
सि	26. 2.42
सं	15. 9.43
मं	25.11.43
पिं	14. 4.44
ध	14.11.44
भ्र	24. 8.45
भद्रि	13. 8.46
उल्	19.11.47

सं	8 वर्ष
आरम्भ	19.11.47
अंत	19.11.55
सं	23. 7.49
मं	13.10.49
पिं	23. 3.50
ध	23.11.50
भ्र	13.10.51
भद्रि	23.11.52
उल्	25. 3.54
सि	19.11.55

मं	1 वर्ष
आरम्भ	19.11.55
अंत	19.11.56
मं	25.10.55
पिं	14.11.55
ध	14.12.55
भ्र	24. 1.56
भद्रि	15. 3.56
उल्	15. 5.56
सि	25. 7.56
सं	19.11.56

पिं	2 वर्ष
आरम्भ	19.11.56
अंत	19.11.58
पिं	25.11.56
ध	25. 1.57
भ्र	14. 4.57
भद्रि	24. 7.57
उल्	24.11.57
सि	13. 4.58
सं	23. 9.58
मं	19.11.58

ध	3 वर्ष
आरम्भ	19.11.58
अंत	19.11.61
ध	13. 1.59
भ्र	13. 5.59
भद्रि	13.10.59
उल्	13. 4.60
सि	12.11.60
सं	12. 7.61
मं	12. 8.61
पिं	19.11.61

॥ योगिनी दशा ॥

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	19.11.61
अंत	19.11.65
भ्र	22. 3.62
भद्रि	12.10.62
उल्	12. 6.63
सि	22. 3.64
सं	11. 2.65
मं	21. 3.65
पिं	10. 6.65
ध	19.11.65

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	19.11.65
अंत	19.11.70
भद्रि	20. 6.66
उल्	20. 4.67
सि	9. 4.68
सं	19. 5.69
मं	9. 7.69
पिं	19.10.69
ध	19. 3.70
भ्र	19.11.70

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	19.11.70
अंत	19.11.76
उल्	9.10.71
सि	9.12.72
सं	8. 4.74
मं	8. 6.74
पिं	8.10.74
ध	8. 4.75
भ्र	8.12.75
भद्रि	19.11.76

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	19.11.76
अंत	19.11.83
सि	18. 2.78
सं	7. 9.79
मं	17.11.79
पिं	6. 4.80
ध	6.11.80
भ्र	16. 8.81
भद्रि	5. 8.82
उल्	19.11.83

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	19.11.83
अंत	19.11.91
सं	15. 7.85
मं	5.10.85
पिं	15. 3.86
ध	15.11.86
भ्र	5.10.87
भद्रि	15.11.88
उल्	17. 3.90
सि	19.11.91

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	19.11.91
अंत	19.11.92
मं	17.10.91
पिं	6.11.91
ध	6.12.91
भ्र	16. 1.92
भद्रि	7. 3.92
उल्	7. 5.92
सि	17. 7.92
सं	19.11.92

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	19.11.92
अंत	19.11.94
पिं	17.11.92
ध	17. 1.93
भ्र	6. 4.93
भद्रि	16. 7.93
उल्	16.11.93
सि	5. 4.94
सं	15. 9.94
मं	19.11.94

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	19.11.94
अंत	19.11.97
ध	5. 1.95
भ्र	5. 5.95
भद्रि	5.10.95
उल्	5. 4.96
सि	4.11.96
सं	4. 7.97
मं	4. 8.97
पिं	19.11.97

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	19.11.97
अंत	19.11.01
भ्र	14. 3.98
भद्रि	4.10.98
उल्	4. 6.99
सि	14. 3.00
सं	3. 2.01
मं	13. 3.01
पिं	2. 6.01
ध	19.11.01

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	19.11.01
अंत	19.11.06
भद्रि	12. 6.02
उल्	12. 4.03
सि	1. 4.04
सं	11. 5.05
मं	1. 7.05
पिं	11.10.05
ध	11. 3.06
भ्र	19.11.06

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	19.11.06
अंत	19.11.12
उल्	1.10.07
सि	1.12.08
सं	31. 3.10
मं	31. 5.10
पिं	1.10.10
ध	1. 4.11
भ्र	1.12.11
भद्रि	19.11.12

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	19.11.12
अंत	19.11.19
सि	11. 2.14
सं	31. 8.15
मं	10.11.15
पिं	30. 3.16
ध	30.10.16
भ्र	9. 8.17
भद्रि	29. 7.18
उल्	19.11.19

॥ चरदशा ॥

चर महादशा

तुला 05 वर्ष	2. 5.14	2. 5.19
वृश्चिक 05 वर्ष	2. 5.19	2. 5.24
धनु 06 वर्ष	2. 5.24	2. 5.30

मकर 03 वर्ष	2. 5.30	2. 5.33
कुंभ 04 वर्ष	2. 5.33	2. 5.37
मीन 09 वर्ष	2. 5.37	2. 5.46

मेष 05 वर्ष	2. 5.46	2. 5.51
वृष 10 वर्ष	2. 5.51	2. 5.61
मिथुन 10 वर्ष	2. 5.61	2. 5.71

कर्क 02 वर्ष	2. 5.71	2. 5.73
सिंह 04 वर्ष	2. 5.73	2. 5.77
कन्या 05 वर्ष	2. 5.77	2. 5.82

चर अन्तरदशा

तुला 5 वर्ष		
वृश्चिक	2.5.14	2.10.14
धनु	2.10.14	2. 3.15
मकर	2.3.15	2. 8.15
कुंभ	2.8.15	2. 1.16
मीन	2.1.16	2. 6.16
मेष	2.6.16	2.11.16
वृष	2.11.16	2. 4.17
मिथुन	2.4.17	2. 9.17
कर्क	2.9.17	2. 2.18
सिंह	2.2.18	2. 7.18
कन्या	2.7.18	2.12.18
तुला	2.12.18	2. 5.19

वृश्चिक 5 वर्ष		
तुला	2.5.19	2.10.19
कन्या	2.10.19	2. 3.20
सिंह	2.3.20	2. 8.20
कर्क	2.8.20	2. 1.21
मिथुन	2.1.21	2. 6.21
वृष	2.6.21	2.11.21
मेष	2.11.21	2. 4.22
मीन	2.4.22	2. 9.22
कुंभ	2.9.22	2. 2.23
मकर	2.2.23	2. 7.23
धनु	2.7.23	2.12.23
वृश्चिक	2.12.23	2. 5.24

धनु 6 वर्ष		
वृश्चिक	2.5.24	2.11.24
तुला	2.11.24	2. 5.25
कन्या	2.5.25	2.11.25
सिंह	2.11.25	2. 5.26
कर्क	2.5.26	2.11.26
मिथुन	2.11.26	2. 5.27
वृष	2.5.27	2.11.27
मेष	2.11.27	2. 5.28
मीन	2.5.28	2.11.28
कुंभ	2.11.28	2. 5.29
मकर	2.5.29	2.11.29
धनु	2.11.29	2. 5.30

॥ चरदशा ॥

मकर 3 वर्ष		
धनु	2.5.30	2. 8.30
वृश्चिक	2.8.30	2.11.30
तुला	2.11.30	2. 2.31
कन्या	2.2.31	2. 5.31
सिंह	2.5.31	2. 8.31
कर्क	2.8.31	2.11.31
मिथुन	2.11.31	2. 2.32
वृष	2.2.32	2. 5.32
मेष	2.5.32	2. 8.32
मीन	2.8.32	2.11.32
कुंभ	2.11.32	2. 2.33
मकर	2.2.33	2. 5.33

कुंभ 4 वर्ष		
मीन	2.5.33	2. 9.33
मेष	2.9.33	2. 1.34
वृष	2.1.34	2. 5.34
मिथुन	2.5.34	2. 9.34
कर्क	2.9.34	2. 1.35
सिंह	2.1.35	2. 5.35
कन्या	2.5.35	2. 9.35
तुला	2.9.35	2. 1.36
वृश्चिक	2.1.36	2. 5.36
धनु	2.5.36	2. 9.36
मकर	2.9.36	2. 1.37
कुंभ	2.1.37	2. 5.37

मीन 9 वर्ष		
मेष	2.5.37	2. 2.38
वृष	2.2.38	2.11.38
मिथुन	2.11.38	2. 8.39
कर्क	2.8.39	2. 5.40
सिंह	2.5.40	2. 2.41
कन्या	2.2.41	2.11.41
तुला	2.11.41	2. 8.42
वृश्चिक	2.8.42	2. 5.43
धनु	2.5.43	2. 2.44
मकर	2.2.44	2.11.44
कुंभ	2.11.44	2. 8.45
मीन	2.8.45	2. 5.46

मेष 5 वर्ष		
वृष	2.5.46	2.10.46
मिथुन	2.10.46	2. 3.47
कर्क	2.3.47	2. 8.47
सिंह	2.8.47	2. 1.48
कन्या	2.1.48	2. 6.48
तुला	2.6.48	2.11.48
वृश्चिक	2.11.48	2. 4.49
धनु	2.4.49	2. 9.49
मकर	2.9.49	2. 2.50
कुंभ	2.2.50	2. 7.50
मीन	2.7.50	2.12.50
मेष	2.12.50	2. 5.51

वृष 10 वर्ष		
मेष	2.5.51	2. 3.52
मीन	2.3.52	2. 1.53
कुंभ	2.1.53	2.11.53
मकर	2.11.53	2. 9.54
धनु	2.9.54	2. 7.55
वृश्चिक	2.7.55	2. 5.56
तुला	2.5.56	2. 3.57
कन्या	2.3.57	2. 1.58
सिंह	2.1.58	2.11.58
कर्क	2.11.58	2. 9.59
मिथुन	2.9.59	2. 7.60
वृष	2.7.60	2. 5.61

मिथुन 10 वर्ष		
वृष	2.5.61	2. 3.62
मेष	2.3.62	2. 1.63
मीन	2.1.63	2.11.63
कुंभ	2.11.63	2. 9.64
मकर	2.9.64	2. 7.65
धनु	2.7.65	2. 5.66
वृश्चिक	2.5.66	2. 3.67
तुला	2.3.67	2. 1.68
कन्या	2.1.68	2.11.68
सिंह	2.11.68	2. 9.69
कर्क	2.9.69	2. 7.70
मिथुन	2.7.70	2. 5.71

कर्क 2 वर्ष		
मिथुन	2.5.71	2. 7.71
वृष	2.7.71	2. 9.71
मेष	2.9.71	2.11.71
मीन	2.11.71	2. 1.72
कुंभ	2.1.72	2. 3.72
मकर	2.3.72	2. 5.72
धनु	2.5.72	2. 7.72
वृश्चिक	2.7.72	2. 9.72
तुला	2.9.72	2.11.72
कन्या	2.11.72	2. 1.73
सिंह	2.1.73	2. 3.73
कर्क	2.3.73	2. 5.73

सिंह 4 वर्ष		
कन्या	2.5.73	2. 9.73
तुला	2.9.73	2. 1.74
वृश्चिक	2.1.74	2. 5.74
धनु	2.5.74	2. 9.74
मकर	2.9.74	2. 1.75
कुंभ	2.1.75	2. 5.75
मीन	2.5.75	2. 9.75
मेष	2.9.75	2. 1.76
वृष	2.1.76	2. 5.76
मिथुन	2.5.76	2. 9.76
कर्क	2.9.76	2. 1.77
सिंह	2.1.77	2. 5.77

कन्या 5 वर्ष		
तुला	2.5.77	2.10.77
वृश्चिक	2.10.77	2. 3.78
धनु	2.3.78	2. 8.78
मकर	2.8.78	2. 1.79
कुंभ	2.1.79	2. 6.79
मीन	2.6.79	2.11.79
मेष	2.11.79	2. 4.80
वृष	2.4.80	2. 9.80
मिथुन	2.9.80	2. 2.81
कर्क	2.2.81	2. 7.81
सिंह	2.7.81	2.12.81
कन्या	2.12.81	2. 5.82

॥ गोचर फल (9-3-2015) ॥

सूर्य कुंभ राशि में आपके पाँचवे भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप जीवन का बड़े उत्साह और उल्लास से स्वागत करेंगे प्रणय प्रेम संबंधों के लिये यह समय श्रेयस्कर नहीं है। बहुत अधिक सोच विचार हानिकर हो सकता है इसलिये इससे आप बचें। अचानक यात्रा की संभावना भी हो सकती है।

चन्द्र तुला राशि में आपके पहले भाव में स्थित है:

इस अवधि में भी मिले जुले फल मिलेंगे। कई अच्छे अवसर मिलेंगे पर आप उनका पूरा उपयोग नहीं कर पायेंगे। स्वास्थ्य के कारण परेशान रहेंगे। मित्र, परिवार और सहयोगियों के साथ बर्ताव में सर्तक रहें। यात्राएं सफलदायक नहीं होंगी इसलिये उनसे बचें। मां बाप का रूग्ण स्वास्थ्य चिन्ताग्रस्त रखेगा।

मंगल मीन राशि में आपके छठे भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप काफी सुखी रहेंगे। नौकरी के हालात सुधरेंगे। प्रचुर लाभ होने की संभावना है। पारिवारिक वातावरण भी सुखद रहेगा। आप अपनी अड़चनें और बाधाएं दूर करने और शत्रुओं का दमन करने के लिये चेष्टारत रहेंगे। कार इत्यादि चलाते समय सावधानी बरतें।



ज्योतिषीय
सॉफ्टवेयर



कुंडली
मिलान



एस्ट्रोसेज
टीवी



एस्ट्रोसेज
ऑप



मोबाइल
एप

उत्पाद
और
सेवाएँ

हमसे संपर्क करें :

नॉएडा ऑफिस : A-139 SEC-63 Noida, U.P

दूरभाष नंबर : +91 9560670006

+91 9911840093

वेब : www.AstroSage.com



एस्ट्रोसेज
पत्रिका



लाल
किताब



सम्पूर्ण-जीवन
फलादेश



क्षेत्रीय
भाषाएँ

॥ गोचर फल (9-3-2015) ॥

बुध कुंभ राशि में आपके पाँचवे भाव में स्थित है:

इस अवधि में अपनी पैनी विवेक बुद्धि और सही अंदाज लगाने की क्षमता के कारण आप प्रचुर सम्मान प्राप्त करेंगे। आपकी कल्पना अत्यधिक सक्रिय रहेगी। नये उद्यमों में निश्चित सफलता प्राप्त करेंगे। यह समय प्रणय और रोमान्स के लिये भी अच्छा है। आपके सृजन बोध की सराहना की जायेगी। पारिवारिक सुख बढ़ा चढ़ा रहेगा। मित्र और शुभ चिन्तक पूरा सहारा देंगे। इस अवधि के दौरान आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के सम्पर्क में आयेंगे। एक यादगार यात्रा होने की भी संभावना है।

गुरु कर्क राशि में आपके दसवें भाव में स्थित है:

व्यापार नौकरी या धन्धे में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। व्यापार का विस्तार होगा और पद बढ़ेगा। इस अवधि में वरिष्ठ लोगों व शक्तिवान व्यक्तियों से स्नेह व सम्मान प्राप्त होगा। व्यापार और नौकरी के सिलसिले में आप काफी भ्रमण करेंगे। शत्रु प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे पर उसमें कामयाब नहीं होंगे। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा।

शुक्र मीन राशि में आपके छठें भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

रत्न



रुद्राक्ष



मूर्तियां



पुस्तकें



जड़ी



परामर्श



एस्ट्रोसेज शॉप

हमसे संपर्क करें

+91 9560670006

+91 9911840126

+91 1204138503

वेब

www.AstroSage.com

॥ गोचर फल (9-3-2015) ॥

शनि वृश्चिक राशि में आपके दूसरे भाव में स्थित है:

इस अवधि में कुछ आर्थिक परेशानियां सामने आएंगी। आमदनी भी ठीक नहीं रहेगी। परिवारजनों की अपेक्षाएं पूरी नहीं होंगी। अपने लोगों से आपकी पटेगी नहीं। रोजमर्रा के जीवन में आपको सावधान रहने की आवश्यकता है। नए उद्यमों से इस अवधि में सम्बंध न हों और महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर बिना देखे दस्तखत न करें। जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाए। मां बाप का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा।

राहू कन्या राशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

इस अवधि में निवास स्थान या नौकरी का परिवर्तन संभावित है। भारी व्यय से आप व्यथित रहेंगे। अपने लोगों से ही झगड़े विवाद हो सकते हैं। यात्राएं थकाने वाली और सफलदायक नहीं रहेंगी। पारिवारिक सदस्य आपके प्रति उदासीन रहेंगे। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। दुष्ट मित्रों से सावधान रहें। वह आपकी प्रतिष्ठा पर आंच लायेंगे। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी चिन्ता का एक कारण रहेगा। अभी किसी यात्रा की योजना न बनाएं।

केतु मीन राशि में आपके छठे भाव में स्थित है:

व्यापार धन्धे में इस अवधि में आप बहुत अच्छा काम करेंगे। अगर नौकरी पेशा हैं तो नौकरी की हालतों में सुधार होगा। व्यापार के विस्तृत होने की संभावना है। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस दौरान हर क्षेत्र से आपको सम्मान मिलेगा। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। प्रतिस्पर्धा में सफल होंगे। दुश्मनों की आपका सामना करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। अचानक यात्रा सौभाग्य वृद्धि करेगी। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। सारे प्रयास कर सौभाग्यकाल को पूरी तरह भुनाने के लिये यह श्रेयस्कर समय है।



ज्योतिषीय
सॉफ्टवेयर



कुंडली
मिलान



एस्ट्रोसेज
टीवी



एस्ट्रोसेज
ऑप



मोबाइल
एप

उत्पाद
और
सेवाएं

हमसे संपर्क करें :

नॉएडा ऑफिस : A-139 SEC-63 Noida, U.P

दूरभाष नंबर : +91 9560670006

+91 9911840093

वेब : www.AstroSage.com



एस्ट्रोसेज
पत्रिका



लाल
किताब



सम्पूर्ण-जीवन
फलादेश



क्षेत्रीय
भाषाएं

॥ लालकिताब फलकथन ॥

सूर्य राशि आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवें भाव में स्थित सूर्य यदि शुभ है और यदि बृहस्पति, मंगल अथवा चंद्रमा दूसरे भाव में है तो जातक सरकार में मंत्री जैसा पद प्राप्त करता है। बुध उच्च का हो या पांचवें भाव में हो अथवा सातवां भाव मंगल से देखा जा रहा हो तो जातक के पास आमदनी का अंतहीन श्रोत होता है। यदि सातवें भाव में स्थित सूर्य हानिकारक हो और बृहस्पति, शुक्र या कोई और अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो तथा बुध किसी भी भाव में नीच का हो तो जातक की मौत किसी मुठभेड़ में परिवार के कई सदस्यों के साथ होती है। जातक को सरकार की ओर से परेशानियां तथा तपेदित और अस्थमा जैसी बीमारियां हो सकती हैं। आगजनी, सांवलापन और अन्य पारिवारिक कष्ट से आई झुंझलाहट जातक को वैरागी बनने या आत्महत्या करने को मजबूर कर सकती है। सातवें भाव हानिकारक सूर्य हो और मंगल या शनि दूसरे या बारहवें भाव में स्थित हों तथा चंद्रमा पहले भाव में हो तो जातक को कुष्ठ या ल्यूकोडर्मा जैसे चर्मरोग हो सकते हैं।

उपाय

- 1) नमक सेवन की मात्रा को कम करें।
- 2) किसी भी काम को शु करने से पहले मीठा खाएं और उसके बाद पानी जर पियें।
- 3) खाना खाने से पहले रोटी का एक टुकड़ा रसोई घर की आग में डालें।
- 4) काली अथवा बिना सींग वाली गाय को पालें और उसकी सेवा करें लेकिन ध्यान रहे गाय सफेद नहीं होनी चाहिए।



एस्ट्रोसेज शॉप

हमसे संपर्क करें +91 9560670006
+91 9911840126
+91 1204138503
वेब www.AstroSage.com

<p>रत्न</p> 	<p>रुद्राक्ष</p> 	<p>मूर्तियां</p> 
<p>पुस्तकें</p> 	<p>जड़ी</p> 	<p>परामर्श</p> 

॥ लालकिताब फलकथन ॥

चन्द्र राशि आपके आठवें भाव में स्थित है:

यह भाव मंगल और शनि के अंतर्गत आता है। यहां पर स्थित चंद्रमा जातक की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। लेकिन यदि शिक्षा अच्छी है तो जातक की मां का जीवन छोटा होता है। लेकिन अक्सर यही देखने को मिलता है कि जातक शिक्षा और माँ को खो देता है। हालांकि, यदि बृहस्पति और शनि दूसरे भाव में हों तो सातवें घर में बैठे चंद्रमा का बुरा कम हो जाएगा। इस भाव में स्थित चन्द्रमा जातक को पैतृक सम्पत्ति से वंचित करता है। यदि जातक की पैतृक सम्पत्ति के पास कोई कुंआ या तालाब होता है तो जातक के जीवन में चंद्रमा के प्रतिकूल परिणाम देखने को मिलते हैं।

उपाय

- 1) जुआ और अनैतिकता से बचें।
- 2) अपने पूर्वजों के लिए श्रद्धा समारोह आयोजित करें।
- 3) कुएं को छत से ढकने के बादघर का निर्माण न करें।
- 4) बुजुर्गों और बच्चों के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
- 5) श्मशान भूमि की सीमा के भीतर स्थित नल या कुएं से पानी लाएं और अपने घर के भीतर रखें। यह सप्तम भाव में स्थित चंद्रमा की सभी बुराइयों दूर करता है।
- 6) पूजा स्थल में चना और दाल दान करें।

मंगल राशि आपके बारहवें भाव में स्थित है:

यह घर बृहस्पति से प्रभावित घर होता है। इसलिए यहां पर मंगल और बृहस्पति दोनों के अच्छे परिणाम मिलते हैं। यह राहू का पक्का घर भी कहा गया है इसलिए मंगल के यहां स्थित होने के कारण राहू का दुष्प्रभाव भी नहीं मिलता।

उपाय

- 1) सुबह खाली पेट शहद का सेवन करें।
- 2) मिठाई खाना और दूसरों को भी देने से जातक के धन की वृद्धि होती है।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

बुध राशि आपके सातवें भाव में स्थित है:

पुरुष कुंडली में सातवें घर में स्थित बुध जातक के शुभचिंतकों के लिए शुभ परिणाम देता है। स्त्री जातक की कुण्डली में भी यह अच्छा परिणाम देता है। जातक की कलम में तलवार से ज्यादा ताकत होगी। जातक की शाली हर लिहाज से सहयोगी सिद्ध होगी। यदि चन्द्रमा पहले भाव में स्थित हो तो विदेश यात्रा लाभकारी रहेगी। तीसरे भाव में स्थित शनि ससुराल वालों को अमीर बनाता है।

उपाय

- 1) साझेदारी के व्यापार से बचें।
- 2) सट्टेबाजी से बचें।
- 3) खराब चरित्र वाली साली से सम्बन्ध न रखें।

गुरु राशि आपके नौवें भाव में स्थित है:

नौवां घर बृहस्पति से विशेष प से प्रभावित होता है। इसलिए इस भाव वाला जातक प्रसिद्ध है, अमीर और एक अमीर परिवार में पैदा होगा। जातक अपनी जुबान का पाक्का और दीर्घायु होगा, उसके बच्चे बड़े अच्छे होंगे। यदि बृहस्पति नीच का हो तो जातक में उपरोक्त गुण नहीं होंगे और वह नास्तिक होगा। यदि बृहस्पति का शत्रु ग्रह पहले, पांचवें या चौथे भाव में हो तो बृहस्पति बुरे परिणाम देगा।

उपाय

- 1) हर रोज मंदिर जाना चाहिए।
- 2) शराब पीने से बचें।
- 3) बहते पानी में चावल बहाएं।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

शुक्र राशि आपके छठें भाव में स्थित है:

यह घर बुध और केतू का माना गया है जो एक दूसरे के शत्रु हैं। लेकिन शुक्र दोनों का मित्र है। इस घर में शुक्र नीच का होता है। लेकिन यदि जातक विपरीत लिंगी को प्रसन्न रखता है और सारे और सुविधा उपलब्ध करवाता है तो उसके धन और पैसे में वृद्धि होगी। जातक की पत्नी को पुरुषों के जैसे कपड़े नहीं पहनने चाहिए और न ही पुरुषों के जैसे बाल रखने चाहिए अन्यथा गरीबी बढ़ती है। ऐसे जातक को उसी से विवाह करना चाहिए जिसके भाई हों। इसके अलावा, जातक कोई भी पूरा किए बिना काम बीच में नहीं छोड़ता।

उपाय

- 1) पत्नी के बालों में सोने की हेयर क्लिप का उपयोग करवाएं।
- 2) खयाल रखें कि पत्नी नंगे पैर न चले।
- 3) निजी अंगों को लाल दवा से धोएं।

शनि राशि आपके पहले भाव में स्थित है:

पहला घर सूर्य और मंगल ग्रह से प्रभावित होता है। पहले घर में शनि तभी अच्छे परिणाम देगा जब तीसरे, सातवें या दसवें घर में शनि के शत्रु ग्रह न हों। यदि, बुध या शुक्र, राहू या केतू, सातवें भाव में हों तो शनि हमेशा अच्छे परिणाम देगा। यदि शनि नीच का हो और जातक के शरीर में बाल अधिक हों तो जातक गरीब होगा। यदि जातक अपना जन्मदिन मनाता है तो बहुत बुरे परिणाम मिलेंगे हालांकि जातक दीर्घायु होगा।

उपाय

- 1) शराब और मांसाहारी भोजन से स्वयं को बचाएं।
- 2) नौकरी और व्यवसाय में लाभ के लिए जमीन में सुरमा दफनायें।
- 3) सुख और समृद्धि के लिए बंदरों की सेवा करें।
- 4) बरगद के पेड़ की जड़ों पर मीठा दूध चढ़ाने से शिक्षा और स्वास्थ्य में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।



**ज्योतिषीय
सॉफ्टवेयर**



**कुंडली
मिलान**



**एस्ट्रोसेज
टीवी**



**एस्ट्रोसेज
ऑप**



**मोबाइल
एप**



**एस्ट्रोसेज
पत्रिका**



**लाल
किताब**



**सम्पूर्ण-जीवन
फलादेश**



**क्षेत्रीय
भाषाएं**

**उत्पाद
और
सेवाएं**

हमसे संपर्क करें :

नॉएडा ऑफिस : A-139 SEC-63 Noida, U.P.

दूरभाष नंबर : +91 9560670006
+91 9911840093

वेब : www.AstroSage.com

॥ लालकिताब फलकथन ॥

राहू राशि आपके पहले भाव में स्थित है:

पहला घर मंगल और सूर्य से प्रभावित होता है, यह घर किसी सिंहासन की तरह होता है। पहले घर में बैठा ग्रह सभी ग्रहों का राजा माना जाता है। जातक अपनी योग्यता से बड़ा पद प्राप्त करेगा। उसे सरकार से भी अच्छे परिणाम मिलेंगे। इस घर में राहू उच्च के सूर्य के समान परिणाम देगा। लेकिन सूर्य जिस भाव में बैठा है उस भाव के फल प्रभावित होंगे। यदि मंगल, शनि और केतू कमजोर हैं तो राहू बुरे परिणाम देगा अन्यथा यह पहले भाव में अच्छे परिणाम देगा। यदि राहू नीच का हो तो जातक को कभी भी ससुराल वालों से बिजली के उपकरण या नीले कपड़े नहीं लेने चाहिए, अन्यथा उसके पुत्र पर बुरा प्रभाव पड़ता है। राहू के दुष्परिणाम 42 साल की उम्र तक मिलते हैं।

उपाय

- 1) बहते पानी में 400 ग्राम सुरमा बहाएं।
- 2) गले में चांदी पहनें।
- 3) 14 के अनुपात में जौ में दूध मिलाए और बहते पानी में बहाएं।
- 4) बहते पानी में नारियल बहाएं।

केतु राशि आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवां घर बुध और शुक्र का होता है। यदि सातवें भाव में स्थित केतू शुभ हो तो जातक चौबीस साल से लेकर चालीस साल तक खूब धन कमाएगा। जातक के बच्चों के अनुपात में धन की वृद्धि होती है। जातक के दुश्मन जातक से डरते हैं। यदि जातक को बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र का सहयोग मिलता है तो जातक को कभी भी निराश नहीं होना पड़ता। यदि सातवें भाव में केतू अशुभ हो तो जातक अक्सर बीमार रहता है, बेकार के वादे करता है और तैंतीस साल की अवस्था तक शत्रुओं से पीड़ित रहता है। यदि लग्न में एक से अधिक ग्रह हों तो जातक के बच्चे नष्ट हो जाते हैं। यदि जातक गालियां देता है तो जातक नष्ट होता है। यदि केतू बुध के साथ हो तो चौतीस सालों के बाद जातक के शत्रु अपने आप नष्ट हो जाते हैं।

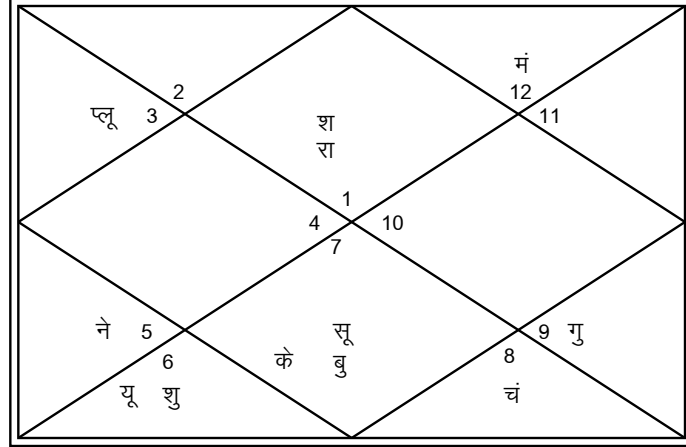
उपाय

- 1) झूठे वादे, घमंड और गाली देने से बचे।
- 2) माथे पर केसर का तिलक लगाएं।
- 3) गंभीर संकट या कष्ट के समय बृहस्पति के उपचार करें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

नाम	Viswraj Singh			सूर्योदय	05. 44. 41	दशा भोग्य MAR 4 Y 10 M 7 D	
लिंग	Male	रेखांश	76.43.E	तिथि	चर्तुथी	सूर्यास्त	18. 55. 35
दिनांक	2.5.2014	अक्षांश	26.28.N	योग	अतिगण्ड	करण	वणिज
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Gangapur	लग्न	तुला	लग्न स्वामी	शुक्र
समय	19.10.0	अयनांश	024-03-24	राशि	वृषभ	राशि स्वामी	शुक्र
साम्पातिक काल	09.28.24	अयनांश नाम	लाहिरी	नक्षत्र	मृगशिरा—2	नक्षत्र स्वामी	मंगल

लग्न चक्र



लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2014 अंत 02/05/2020 राहु 02/05/2016 बुध 02/05/2018 शनि 02/05/2020	राहु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2020 अंत 02/05/2026 मंगल 02/05/2022 केतु 02/05/2024 राहु 02/05/2026	केतु 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2026 अंत 02/05/2029 शनि 02/05/2027 राहु 02/05/2028 केतु 02/05/2029	गुरु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2029 अंत 02/05/2035 केतु 02/05/2031 गुरु 02/05/2033 सूर्य 02/05/2035	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2035 अंत 02/05/2037 सूर्य 02/01/2036 चन्द्र 02/09/2036 मंगल 02/05/2037	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 02/05/2037 अंत 02/05/2038 गुरु 02/09/2037 सूर्य 02/01/2038 चन्द्र 02/05/2038
शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2038 अंत 02/05/2041 मंगल 02/05/2039 सूर्य 02/05/2040 चन्द्र 02/05/2041	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2041 अंत 02/05/2047 मंगल 02/05/2043 शनि 02/05/2045 शुक्र 02/05/2047	बुध 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2047 अंत 02/05/2049 चन्द्र 02/01/2048 मंगल 02/09/2048 गुरु 02/05/2049	शनि 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2049 अंत 02/05/2055 राहु 02/05/2051 बुध 02/05/2053 शनि 02/05/2055	राहु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2055 अंत 02/05/2061 मंगल 02/05/2057 केतु 02/05/2059 राहु 02/05/2061	केतु 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2061 अंत 02/05/2064 शनि 02/05/2062 राहु 02/05/2063 केतु 02/05/2064
गुरु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2064 अंत 02/05/2070 केतु 02/05/2066 गुरु 02/05/2068 सूर्य 02/05/2070	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2070 अंत 02/05/2072 सूर्य 02/01/2071 चन्द्र 02/09/2071 मंगल 02/05/2072	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 02/05/2072 अंत 02/05/2073 गुरु 02/09/2072 सूर्य 02/01/2073 चन्द्र 02/05/2073	शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2073 अंत 02/05/2076 मंगल 02/05/2074 सूर्य 02/05/2075 चन्द्र 02/05/2076	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2076 अंत 02/05/2082 मंगल 02/05/2078 शनि 02/05/2080 शुक्र 02/05/2082	बुध 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2082 अंत 02/05/2084 चन्द्र 02/01/2083 मंगल 02/09/2083 गुरु 02/05/2084
शनि 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2084 अंत 02/05/2090 राहु 02/05/2086 बुध 02/05/2088 शनि 02/05/2090	राहु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2090 अंत 02/05/2096 मंगल 02/05/2092 केतु 02/05/2094 राहु 02/05/2096	केतु 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2096 अंत 02/05/2099 शनि 02/05/2097 राहु 02/05/2098 केतु 02/05/2099	गुरु 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2099 अंत 02/05/2105 केतु 02/05/2101 गुरु 02/05/2103 सूर्य 02/05/2105	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2105 अंत 02/05/2107 सूर्य 02/01/2106 चन्द्र 02/09/2106 मंगल 02/05/2107	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 02/05/2107 अंत 02/05/2108 गुरु 02/09/2107 सूर्य 02/01/2108 चन्द्र 02/05/2108
शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 02/05/2108 अंत 02/05/2111 मंगल 02/05/2109 सूर्य 02/05/2110 चन्द्र 02/05/2111	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 02/05/2111 अंत 02/05/2117 मंगल 02/05/2113 शनि 02/05/2115 शुक्र 02/05/2117	बुध 2 वर्ष आरम्भ 02/05/2117 अंत 02/05/2119 चन्द्र 02/01/2118 मंगल 02/09/2118 गुरु 02/05/2119			

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य मेष राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की उच्च राशि है। सूर्य ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। सूर्य की दृष्टि पहले घर पर है। मंगल, शनि, राहू की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

इस भाव में सूर्य की उपस्थिति शुभ नहीं मानी गई है। इस भाव में उपस्थित सूर्य आपको इतना अधिक स्वाभिमानी बना सकता है कि लोग आपको घमंडी समझ सकते हैं। ऐसे में स्वाभाव में कठोरता आना भी सम्भव है। कार्यक्षेत्र में लाभ और काम करने में अधिक आनंद तभी आएगा जब आपका कार्यालय आपके निवास स्थान से समीप ही हो।

सूर्य की इस भाव में स्थिति वैवाहिक जीवन के लिए भी ठीक नहीं मानी गई है। अतः जीवन साथी से मतभेद सम्भव है। विशेषकर विवाह के पंद्रह वर्षों तक वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की कमी रहती है। फिर भी जीवन साथी का स्वभाव शमीला हो सकता है। उसके अंग कोमल और नाजुक हो सकते हैं। यहां स्थित सूर्य आपको आत्मरत भी बना सकता है और लोग आपको स्वार्थी समझ सकते हैं।

सूर्य की यह स्थिति किसी विशेष बात को लेकर आपको चिंचित रख सकती है। पिता की बहन अर्थात् बुआ के साथ आपके सम्बंध खराब रह सकते हैं। कभीकभी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संबंधों को लेकर भी परेशानी उठानी पड़ सकती है। सत्ता पक्ष, सरकार या सरकारी कर्मचारियों के द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है या इनके कारण हानि हो सकती है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र वृषभ राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की उच्च राशि है। चन्द्र दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में आठवें घर में स्थित है। चन्द्र की दृष्टि दूसरे घर पर है।

आठवें भाव के चंद्रमा को बहुत अच्छा नहीं माना गया है। अतः आपको भी कुछ अनचाहे फलों की प्राप्ति हो सकती है। हांलाकि यहां का चंद्रमा कई शुभ फलों का दाता भी होता है। जिसके कारण आपको व्यापार में लाभ मिलेगा। आप स्वाभिमानी होंगे। आपको विवाह के माध्यम से धन की प्राप्ति होगी। लेकिन यह स्थिति आपको बाचाल बना सकती है।

विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है। कामों में अडचने आती हैं। आपको किसी बंधन के कारण दुख का सामना करना पड़ सकता है। यदा कदा किसीकिसी के नजरिए से आप ईर्ष्यालु भी कहे जा सकते हैं। माता मे साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत कम ठीक रहेंगे या माता को कष्ट रह सकता है। शत्रुओं के द्वारा परेशानी उत्पन्न होने का भय भी बना रहेगा।

आपको आखों की तकलीफें व अन्य शारीरिक कष्ट हो सकते हैं। आपको सूजन या फेफड़े से सम्बंधित किसी तकलीफ का सामना भी करना पड़ सकता है। जल से संबंधित रोगों का भय आपको आजीवन बना रहेगा। इसके अलावा मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी से भी आपको परेशानी हो सकती है। संयम न बरतने पर अरुचि व मूत्रकृच्छ आदि रोग भी परेशान कर सकते हैं।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल कन्या राशि में स्थित है, जो कि मंगल की शत्रु राशि है। मंगल सातवें, दूसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में बारहवें घर में स्थित है। मंगल की दृष्टि तीसरे, छठे, सातवें घर पर है। शुक्र की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

यहां स्थित मंगल अधिकांश मामलों में विपरीत परिणाम ही देता है। लेकिन आपको शस्त्र विद्या में निपुण बनाता है। दाम्पत्य जीवन के लिए यहां स्थित मंगल को अच्छा नहीं माना गया है। यहां स्थित मंगल आपके स्वभाव को उग्र बनाता है। खर्च अधिक होने के कारण आपको कर्जदार भी होना पड़ सकता है। यहां स्थित मंगल आखों में लाली या फिर अन्य नेत्र रोग दे सकता है।

आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति कम हो सकती है। अथवा धर्म के कार्यों से जुड़े होने के बावजूद भी आप धर्म की महत्ता को न समझते हों। आपको चोरो का भय भी रह सकता है अतः अपनी चीजों को सही ढंग से सहेजकर रखना उचित होगा। जीवन साथी के प्रति हिंसात्मक विचारों को दूर रखना भी ठीक रहेगा। आपके बड़े बेटे को शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है।

यहां स्थिति मंगल के कारण आपके छोटे भाई या बहन को बड़ा पद और बड़ी प्रतिष्ठा भी मिल सकती है। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति में कुछ उतार चढ़ाव सम्भव है। आपके माता को पेट से सम्बंधित बीमारी हो सकती है। कभीकभी फिजूलखर्ची के कारण आपको आर्थिक विषमताओं का भी सामना करना पड़ सकता है। हालांकि आप संतो और शिक्षकों का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध मेष राशि में स्थित है, जो कि बुध की सम राशि है। बुध नौवें, बारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। बुध की दृष्टि पहले घर पर है। मंगल, शनि, राहू की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

बुध की यहां स्थिति अधिकांश मामलों में आपको शुभफल ही देगी। यहां स्थित बुध के कारण आप धनवान तो होंगे ही साथ ही आप पवान भी होंगे। आपका जीवन साथी भी स्वपवान होना चाहिए। साथ ही आपके जीवन साथी के पास धन दौलत भी खूब होगी। आपका विवाह कुलीन परिवार में होना चाहिए। लेकिन जीवन साथी का स्वभाव थोड़ा सा झगडालू हो सकता है।

आप आपके मित्रों में स्त्रियां अधिक संख्या में होंगी। आप देखने में सुन्दर, कुलीन और शिष्ट व्यक्ति हैं। आप स्वभाव से उदार और धार्मिक भी हैं। आप दीर्घायु, मधुरभाषी और सुशील व्यक्ति हैं। आप शिल्पकला में चतुर और विनोदी होने के साथसाथ काम कला में भी निपुण होंगे। आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते हैं।

आप एक कुशल व्यवसायी भी हो सकते हैं। आप किसी भी खरीदने और बेचने के काम से लाभ कमा सकते हैं। लेकिन आपको अपने व्यवसायिक पार्टनर पर विश्वास नहीं रहेगा। आपको लड़ाई या वादविवाद से बचना होगा अन्यथा उसमें पराजय ही आपके हाथ लगेगी। आपको भक्षाभक्ष में भेद करते हुए सात्विक चीजों का ही सेवन करना चाहिए।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

गुरु विचार

आपकी कुण्डली में गुरु मिथुन राशि में स्थित है, जो कि गुरु की शत्रु राशि है। गुरु तीसरे, छठे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में नौवें घर में स्थित है। गुरु की दृष्टि पहले, तीसरे, पांचवें घर पर है। राहू की पूर्ण दृष्टि गुरु पर है।

नवमें भाव में बृहस्पति होने के कारण आप स्वभाव से धार्मिक हैं और सच बोलना आपको पसंद है। आप नीतिमान, विचारशील और माननीय व्यक्ति हैं। देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुजनों में आपकी अपार श्रद्धा होगी। आप दान पुण्य में विश्वास करने वाले व्यक्ति हैं। आप भक्त, योगी, वेदान्ती, शशास्त्रज्ञ, विद्वान और अपने कुल की परम्परा को मानने और आगे बढ़ाने वाले व्यक्ति होंगे।

आप शशांत, सदाचारी, और उच्च विचार वाले हैं। आप सभी शशास्त्रों और कलाओं से परिपूर्ण, व्रती और देवपितृभक्त होंगे। आपको तीर्थ यात्रा और धार्मिक कार्यों से बड़ा लगाव होगा। आप पराक्रमी, यशस्वी, विख्यात, मनुष्यों में श्रेष्ठ, भाग्यवान और साधु स्वभाव के होंगे। आप अपनी उम्र के पैंतीसवें वर्ष में देव यज्ञ कर सकते हैं। आपको मकान का पूर्ण सुख मिलेगा।

आप न्यायकर्ता या लेखक हो सकते हैं। आप मंत्री, नेता या प्रधान भी हो सकते हैं। आप कानूनी काम, क्लर्क का काम, धार्मिक विषयों, वेदांत और दूर के प्रवास के माध्यम से भी आजीविका चला सकते हैं। आप राजा या सरकार के बड़े करीबी या प्रेम पात्र होंगे। आपके पास भी राजाओं जैसा ऐश्वर्य होना चाहिए। आप भाई, मित्रों और सेवकों से युक्त होंगे। लेकिन आपको चाहिए कि किसी भी काम को अधूरा न छोड़ें और आलस्य से बचें।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र मीन राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की उच्च राशि है। शुक्र आठवें, पहले घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है। शुक्र की दृष्टि बारहवें घर पर है। मंगल की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

इस भाव में स्थित शुक्र के कुछ अच्छे फल कहे गए हैं लेकिन कई अशुभ फल बताए गए हैं। शुक्र की इस भाव में स्थिति आपके कुल की श्रेष्ठता का द्योतक हो सकती है। आप सुशिक्षित और विवेकवान हो सकते हैं। लेकिन यहां स्थित शुक्र आपको डरपोक बना सकता है अथवा आपको स्त्रियों से अप्रियता भी मिल सकती है। गुरुजनों से भी आपका विरोध रह सकता है।

आपको शत्रुओं से पीडा भी मिल सकती है। हालांकि आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आपको भाईबहनों और मामा से सुख मिलेगा। आपके मामा के कन्या संतान अधिक हो सकती हैं। आपके अच्छे मित्रों की संख्या कम होगी जबकि खराब आदतों वाले मित्र अधिक संख्या में होंगे। आपकी प्रथम संतान पुत्र के प में हो सकती है। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्रपौत्रों से युक्त होंगे।

स्त्री पक्ष से आपको कम सुख मिलेगा अथवा कुछ गुप्त परेशानियां रह सकती हैं। हालांकि विवाह के बाद यदि आपका आहार विहार नियमित और मर्यादित रहेगा तो समस्याएं नहीं होंगी। आपके खर्च आमदनी से अधिक हो सकते हैं। हो सकता है कि आप उचित स्थान पर खर्च न करके अनुचित जगह पर खर्च करें। हो सकता है कि स्वतंत्र व्यवसाय से भी आपको बहुत लाभ न मिल पाए।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि तुला राशि में स्थित है, जो कि शनि की उच्च राशि है। शनि चौथे, पांचवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। शनि की दृष्टि तीसरे, सातवें, दसवें घर पर है। सूर्य, बुध, गुरु, केतु की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

आपके प्रथम भाव में शनि ग्रह स्थित है अतः आपको इसके मिले जुले फलों की प्राप्ति होगी। पुराने ज्योतिषीय ग्रंथकारों के अनुसार शनि की यह स्थिति एकान्तप्रियता देती है। आप अपने आपको प्रपंचों से दूर रखना चाहेंगे। यदि आप किसी से पहली बार मिलते हैं या कोई आपसे पहली बार मिलता है तो सामने वाले पर आपके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ता है।

आप हठी, निश्चयी या कुछ हद तक उदासीन भी हो सकते हैं। आप दीर्घायु और गुणवान होंगे साथ ही आपको राजाओं जैसे अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। आपको सरकार या राज पक्ष से लाभ मिलेगा। यदि आप मेहनत करने से नहीं घबराएंगे तो आप धनवान और सुखी होंगे। आपके विरोधी कितने भी बलिष्ठ क्यों न हों आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

आप गांव या शहर के मुखिया हो सकते हैं। लेकिन प्रारम्भिक आयु में आपको कुछ हद तक संघर्ष करना पड़ सकता है। लेकिन भारी उद्योग, आत्मविश्वास और धैर्य के कारण आप अन्ततः सफलता प्राप्त करेंगे। यहां स्थित शनि के दुष्प्रभावों से बचने के लिए आप स्वयं को स्वच्छ रखें, आलस्य से बचें तथा व्यर्थ में विवाद न करें। आप को वात रोग होने का भय रहेगा अतः उससे बचाव के बारे में चिंतन व कार्य करें।

राहू विचार

आपकी कुण्डली में राहू तुला राशि में स्थित है। राहू पहले घर में स्थित है। राहू की दृष्टि पांचवें, सातवें, नौवें घर पर है। सूर्य, बुध, गुरु, केतु की पूर्ण दृष्टि राहू पर है।

इस भाव में स्थित राहू के मिश्रित फल कहे गए हैं। आप परोपकारी और धैर्यवान व्यक्ति हैं। यहां स्थित राहू आपके कद को ऊंचा बनाता है। आपका शरीर कभी रोगी तो कभी निरोगी रहता है। आपको धन की कमी नहीं रहेगी। कहीं न कहीं से किसी न किसी माध्यम से आपको धन की प्राप्ति होती रहेगी। आप दूसरे के धन अपने लिए प्रयोग करेंगे साथ ही उसी धन से दूसरों को भी लाभ पहुंचाना चाहेंगे।

आप अपने जीवन काल में विभिन्न भोगों का उपभोग करेंगे। आपका वेष लोगों में प्रभावशाली रहेगा। आप बड़ों से विनम्र व्यवहार करते हैं। आप छोटे स्तर में पैदा होकर भी बड़ा स्तर प्राप्त कर पाएंगे और लोगों की नजरों में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। आप साहसिक कार्य करने में दक्ष हैं लेकिन हो सकता है कि शिक्षा में आपका ध्यान कम हो। फिर भी आप व्यवहारिक कामों में निपुण होंगे और दूसरों से अपना काम करवाने में समर्थ होंगे।

आप अपने वादे को पूरा करने में विश्वास रखते हैं। आप बुद्धिमान और व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं लेकिन यहां स्थित राहू के कुछ अशुभ परिणाम भी कहे गए हैं अतः आपमें बेवजह शक करने की आदत हो सकती है। अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा समझने का भ्रम रह सकता है। आप चाहेंगे कि हर व्यक्ति आपके निर्देशानुसार आचरण करे। इसकारण आप लोगों की नजरों से गिर सकते हैं।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु मेष राशि में स्थित है। केतु सातवें घर में स्थित है। केतु की दृष्टि ग्यारहवें, पहले, तीसरे घर पर है। मंगल, शनि, राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

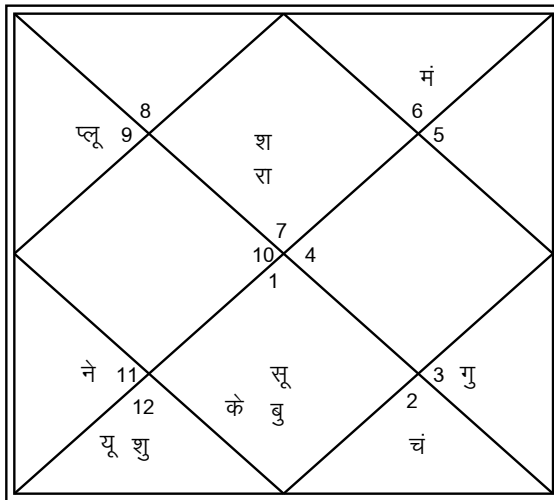
यहां स्थित केतू को केवल आर्थिक मामलों के लिए कुछ हद तक अच्छा माना गया है। अतः आपको धन का उत्तम सुख मिल सकता है, और लौटा हुआ धन स्थिर रहेगा। लेकिन अधिकांश मामलों में यहां स्थित केतू को अशुभफल दाता कहा गया है। कहा गया है कि यहां स्थित केतू जातक को मतिमंद और मूर्ख बनाता है। जातक अच्छे को बुरा और बुरे को अच्छा समझता है।

जातक स्वयं के चरित्र को ध्यान में न रखकर दूसरों के चरित्र पर संदेह करता है। यहां स्थित केतू आपका अपमान कर सकता है। वैवाहिक सुख कम मिलता है। दुष्टों की संगति मिलती है। मित्रों से भी कष्ट मिलता है। यात्राएं कष्टकारी या असफल हो जाती हैं। आपको मार्ग संबंधी चिंताएं रहेंगी। आपका धन अधिक खर्च होगा।

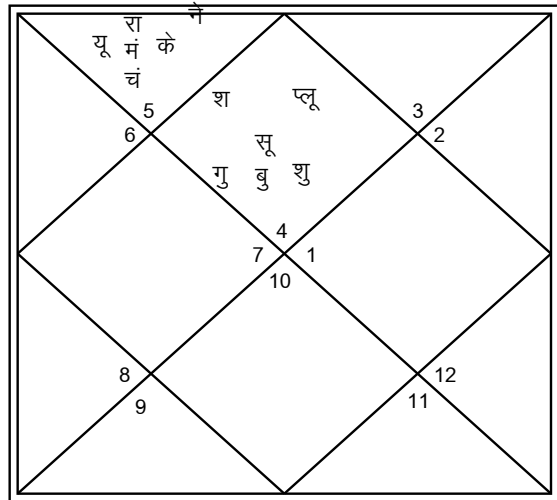
कई मामलों में आपका धन बेकार में नष्ट हो जाएगा। आपको आर्थिक चिंता रह सकती है। पिता के द्वारा संचित धन जल्दी नष्ट हो जाता है। शत्रुओं का भय रहता है और शत्रुओं के द्वारा धन हानि भी होती है। सरकार से भी भय बना रहता है। वात रोग, अंतर्द्वियों के रोग और वीर्य संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको जल के माध्यम से भी भय बना रहेगा।

॥ शोडशवर्ग कुण्डलियाँ ॥

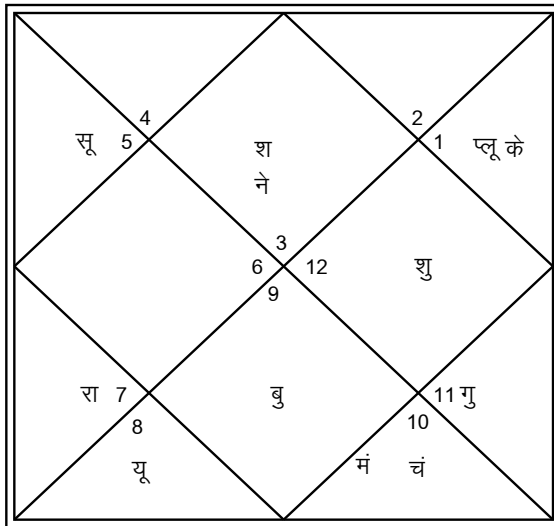
लग्न चक्र



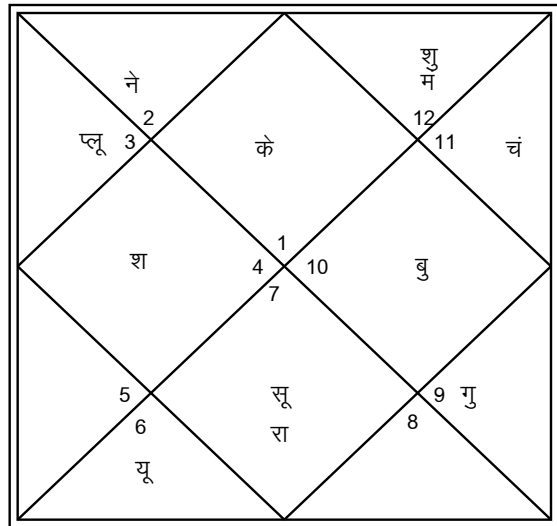
होरा-धन-सम्पत्ति



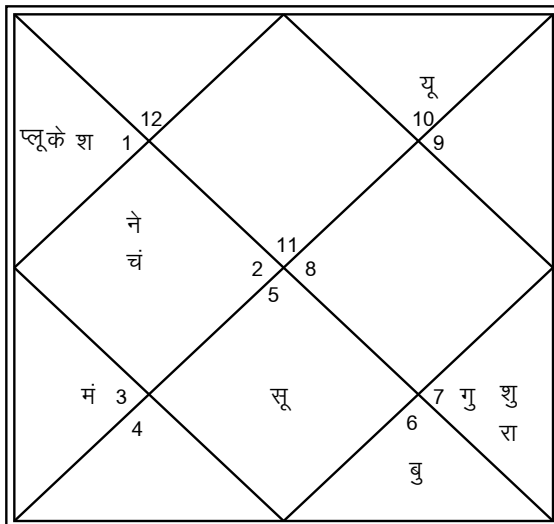
द्रेष्काण-भाई-बहन



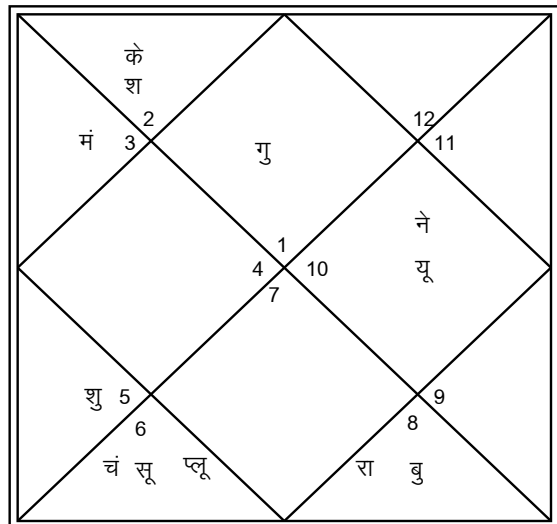
चतुर्थाश-भाग्य



सप्तमांश-बच्चे

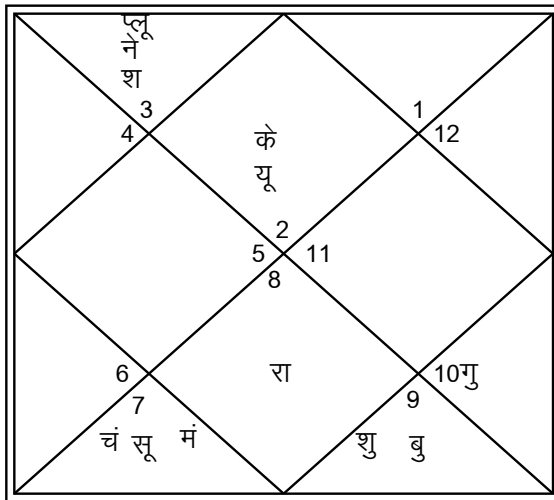


नवमांश-पति-पत्नी

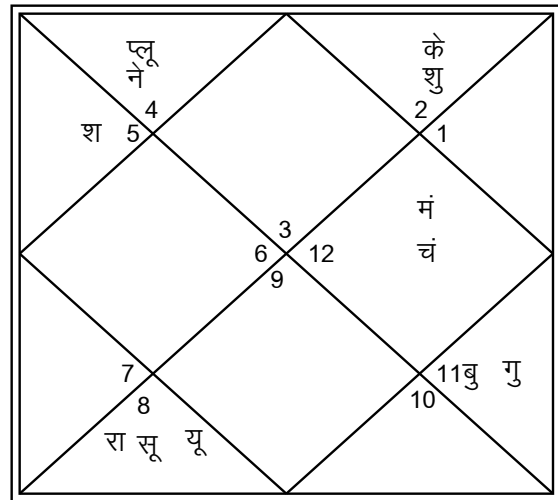


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

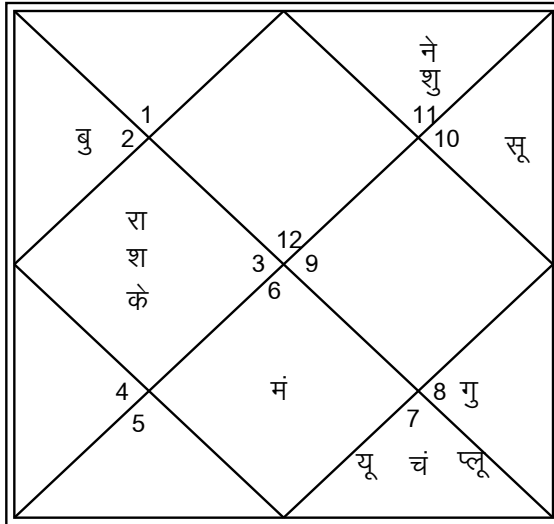
दशमांश-व्यवसाय



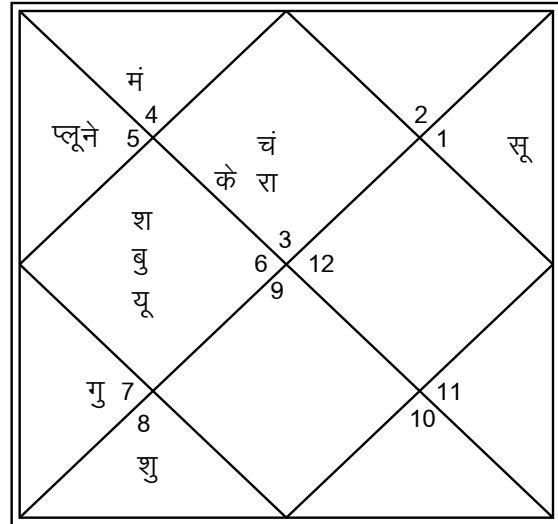
द्वादशांश-माता-पिता



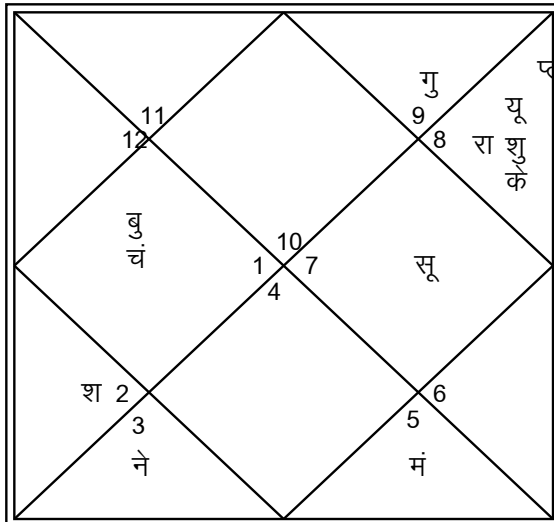
षोडशांश-वाहन



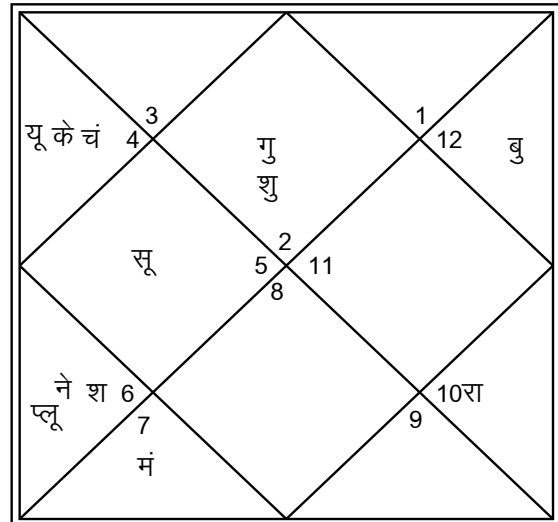
विंशांश-धार्मिक रुचि



सप्तविंशांश-बल

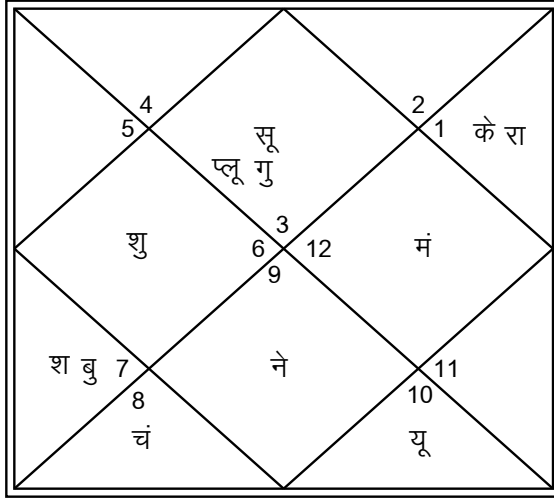


चतुर्विंशांश-शिक्षा

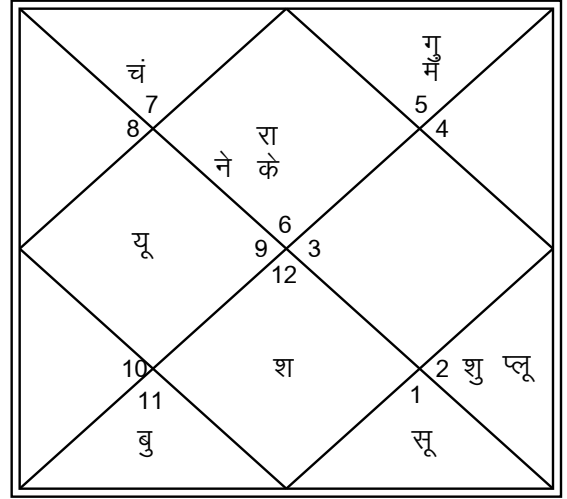


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

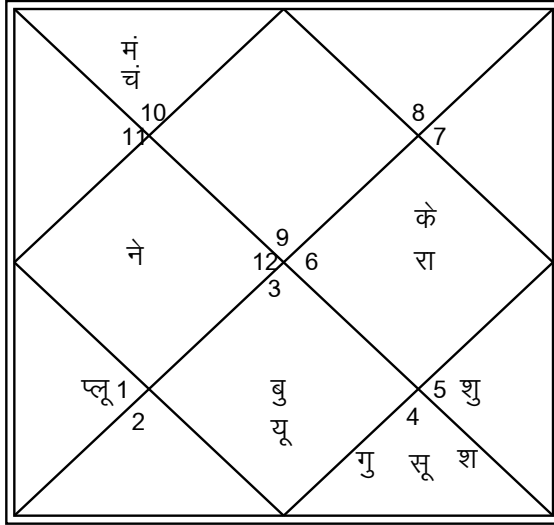
त्रिंशंश-दुर्भाग्य



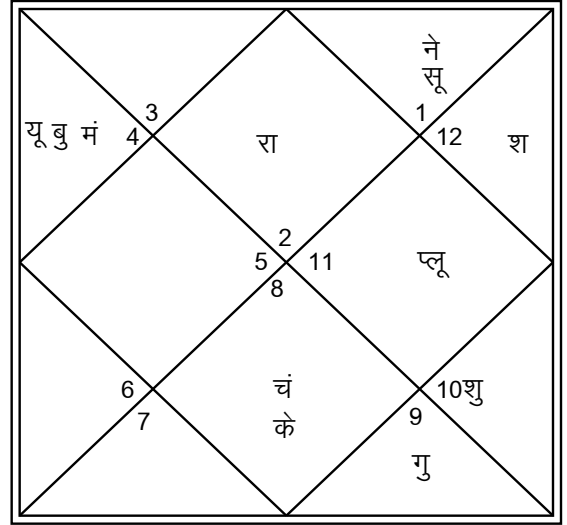
खवेदांश-शुभ फल



अक्षवेदांश-सामान्य जीवन



षष्ट्यंश-सामान्य जीवन



एस्ट्रोसेज शॉप

हमसे संपर्क करें

+91 9560670006

+91 9911840126

+91 1204138503

वेब

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



मूर्तियां



पुस्तकें



जड़ी

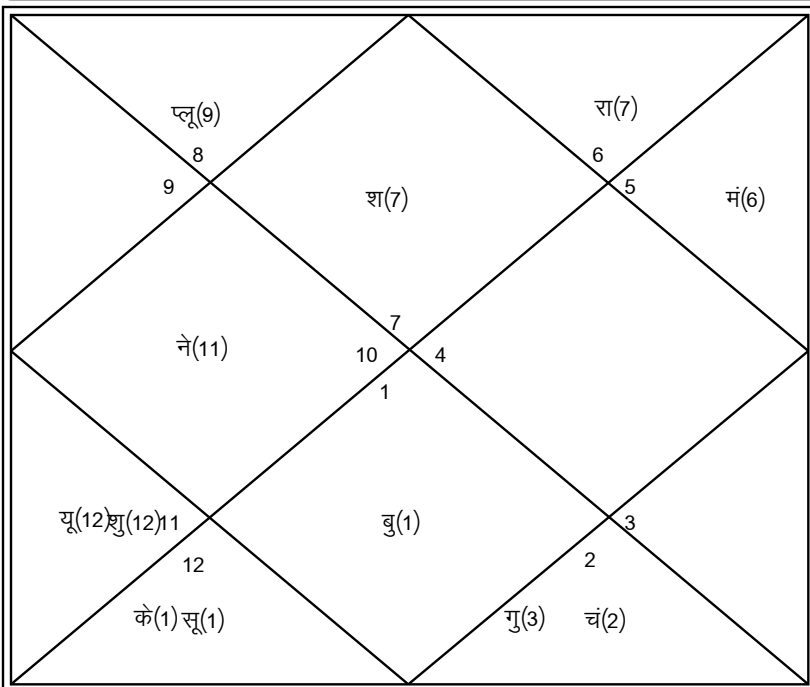


परामर्श



॥ केपी पद्धति ॥

नाम	Viswraj Singh			सूर्योदय	05. 44. 41	दशा भोग्य	MAR 4 Y 10 M 7 D
लिंग	Male	रेखांश	76.43.E	तिथि	चर्तुथी	सूर्यास्त	18. 55. 35
दिनांक	2.5.2014	अक्षांश	26.28.N	योग	अतिगण्ड	करण	वणिज
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Gangapur	लग्न	तुला	लग्न स्वामी	शुक्र
समय	19.10.0	अयनांश	023-58-00	राशि	वृषभ	राशि स्वामी	शुक्र
साम्पातिक काल	09.28.24	अयनांश नाम	केपी	नक्षत्र	मृगशिरा-2	नक्षत्र स्वामी	मंगल



शासक ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
ग्रह			
लग्न	शुक्र	गुरु	शनि
चन्द्र	शुक्र	मंगल	गुरु
दिन स्वामी		शुक्र	

भाव स्थिति	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	202.03.02	शुक्र	गुरु	शनि	शनि
2	231.23.56	मंगल	बुध	शुक्र	बुध
3	262.46.42	गुरु	शुक्र	शनि	शुक्र
4	295.43.22	शनि	मंगल	राहु	शुक्र
5	328.00.53	शनि	गुरु	शुक्र	शनि
6	356.59.10	गुरु	बुध	गुरु	शुक्र
7	022.03.02	मंगल	शुक्र	शनि	शनि
8	051.23.56	शुक्र	चंद्र	शुक्र	राहु
9	082.46.42	बुध	गुरु	शनि	शुक्र
10	115.43.22	चंद्र	बुध	राहु	शुक्र
11	148.00.53	सूर्य	सूर्य	चंद्र	बुध
12	176.59.10	बुध	मंगल	गुरु	शुक्र

ग्रह स्थिति	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	018.07.10	मंगल	शुक्र	राहु	राहु
चन्द्र	057.30.43	शुक्र	मंगल	गुरु	चंद्र
मंगल	167.07.35	बुध	चंद्र	शनि	मंगल
बुध	025.39.05	मंगल	शुक्र	बुध	शनि
गुरु	081.12.47	बुध	गुरु	गुरु	सूर्य
शुक्र	335.29.21	गुरु	शनि	बुध	बुध
शनि	206.39.07	शुक्र	गुरु	शुक्र	शुक्र
राहु	183.51.20	शुक्र	मंगल	शुक्र	गुरु
केतु	003.51.20	मंगल	केतु	चंद्र	राहु
अरुण	350.15.50	गुरु	बुध	शुक्र	राहु
वरुण	313.10.10	शनि	राहु	बुध	शुक्र
यम	259.23.41	गुरु	शुक्र	राहु	शुक्र

घर के कारक ग्रह	भाव	ग्रह
1	सू	बु
2	चं	मं
3	गु	श
4	शु	श
5	सू	बु
6	सू	गु
7	चं	मं
8	सू	चं
9	बु	
10	चं	मं
11	सू	चं
12	बु	रा

ग्रह कारकत्व	ग्रह	भाव
सूर्य	1	5 6 8 11
चन्द्र	2	7 8 10 11
मंगल	2	7 8 10 11
बुध	1	5 7 8 9 12
गुरु	3	6 8
शुक्र	1	4 5 8
शनि	1	3 4 5 6 8
राहु	2	7 11 12
केतु	6	

मंगल -7 वर्ष	2/ 5/14 से 10/ 3/19
मंगल	00/00/00
राहु	00/00/00
गुरु	1/8/14
शनि	10/9/15
बुध	7/9/16
केतु	4/2/17
शुक्र	4/4/18
सूर्य	10/8/18
चंद्र	10/3/19

राहु -18 वर्ष	10/ 3/19 से 10/ 3/37
राहु	22/11/21
गुरु	16/4/24
शनि	22/2/27
बुध	10/9/29
केतु	28/9/30
शुक्र	28/9/33
सूर्य	22/8/34
चंद्र	22/2/36
मंगल	10/3/37

गुरु -16 वर्ष	10/ 3/37 से 10/ 3/53
गुरु	28/4/39
शनि	10/11/41
बुध	16/2/44
केतु	22/1/45
शुक्र	22/9/47
सूर्य	10/7/48
चंद्र	10/11/49
मंगल	16/10/50
राहु	10/3/53

शनि -19 वर्ष	10/ 3/53 से 10/ 3/72
शनि	13/3/56
बुध	22/11/58
केतु	1/1/60
शुक्र	1/3/63
सूर्य	13/2/64
चंद्र	13/9/65
मंगल	22/10/66
राहु	28/8/69
गुरु	10/3/72

बुध -17 वर्ष	10/ 3/72 से 10/ 3/89
बुध	7/8/74
केतु	4/8/75
शुक्र	4/6/78
सूर्य	10/4/79
चंद्र	10/9/80
मंगल	7/9/81
राहु	25/3/84
गुरु	1/7/86
शनि	10/3/89

केतु -7 वर्ष	10/ 3/89 से 10/ 3/96
केतु	7/8/89
शुक्र	7/10/90
सूर्य	13/2/91
चंद्र	13/9/91
मंगल	10/2/92
राहु	28/2/93
गुरु	4/2/94
शनि	13/3/95
बुध	10/3/96

शुक्र -20 वर्ष	10/ 3/96 से 10/ 3/16
शुक्र	10/7/99
सूर्य	10/7/00
चंद्र	10/3/02
मंगल	10/5/03
राहु	10/5/06
गुरु	10/1/09
शनि	10/3/12
बुध	10/1/15
केतु	10/3/16

सूर्य -6 वर्ष	10/ 3/16 से 10/ 3/22
सूर्य	28/6/16
चंद्र	28/12/16
मंगल	4/5/17
राहु	28/3/18
गुरु	16/1/19
शनि	28/12/19
बुध	4/11/20
केतु	10/3/21
शुक्र	10/3/22

चंद्र -10 वर्ष	10/ 3/22 से 10/ 3/32
चंद्र	10/1/23
मंगल	10/8/23
राहु	10/2/25
गुरु	10/6/26
शनि	10/1/28
बुध	10/6/29
केतु	10/1/30
शुक्र	10/9/31
सूर्य	10/3/32

दशा भोग्य: MAR 4 Y 10 M 7 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: लाहिरी

मंगल — शनि 2/ 5/14 से 10/ 9/15		मंगल — बुध 10/ 9/15 से 7/ 9/16		मंगल — केतु 7/ 9/16 से 4/ 2/17		मंगल — शुक्र 4/ 2/17 से 4/ 4/18		मंगल — सूर्य 4/ 4/18 से 10/ 8/18	
शनि	4/10/14	बुध	30/10/15	केतु	15/9/16	शुक्र	14/4/17	सूर्य	10/4/18
बुध	30/11/14	केतु	21/11/15	शुक्र	10/10/16	सूर्य	5/5/17	चंद्र	20/4/18
केतु	24/12/14	शुक्र	21/1/16	सूर्य	17/10/16	चंद्र	10/6/17	मंगल	28/4/18
शुक्र	2/3/15	सूर्य	8/2/16	चंद्र	29/10/16	मंगल	4/7/17	राहु	17/5/18
सूर्य	20/3/15	चंद्र	8/3/16	मंगल	8/11/16	राहु	7/9/17	गुरु	4/6/18
चंद्र	23/4/15	मंगल	29/3/16	राहु	30/11/16	गुरु	3/11/17	शनि	23/6/18
मंगल	17/5/15	राहु	23/5/16	गुरु	20/12/16	शनि	10/1/18	बुध	11/7/18
राहु	16/7/15	गुरु	10/7/16	शनि	13/1/17	बुध	9/3/18	केतु	19/7/18
गुरु	10/9/15	शनि	7/9/16	बुध	4/2/17	केतु	4/4/18	शुक्र	10/8/18

मंगल — चंद्र 10/ 8/18 से 10/ 3/19		राहु — राहु 10/ 3/19 से 22/11/21		राहु — गुरु 22/11/21 से 16/ 4/24		राहु — शनि 16/ 4/24 से 22/ 2/27		राहु — बुध 22/ 2/27 से 10/ 9/29	
चंद्र	27/8/18	राहु	5/8/19	गुरु	17/3/22	शनि	28/9/24	बुध	2/7/27
मंगल	9/9/18	गुरु	15/12/19	शनि	4/8/22	बुध	23/2/25	केतु	25/8/27
राहु	11/10/18	शनि	19/5/20	बुध	6/12/22	केतु	23/4/25	शुक्र	28/1/28
गुरु	9/11/18	बुध	7/10/20	केतु	26/1/23	शुक्र	14/10/25	सूर्य	14/3/28
शनि	12/12/18	केतु	3/12/20	शुक्र	20/6/23	सूर्य	6/12/25	चंद्र	1/6/28
बुध	12/1/19	शुक्र	15/5/21	सूर्य	4/8/23	चंद्र	1/3/26	मंगल	24/7/28
केतु	24/1/19	सूर्य	4/7/21	चंद्र	16/10/23	मंगल	1/5/26	राहु	12/12/28
शुक्र	1/3/19	चंद्र	25/9/21	मंगल	6/12/23	राहु	5/10/26	गुरु	14/4/29
सूर्य	10/3/19	मंगल	22/11/21	राहु	16/4/24	गुरु	22/2/27	शनि	10/9/29

राहु — केतु 10/ 9/29 से 28/ 9/30		राहु — शुक्र 28/ 9/30 से 28/ 9/33		राहु — सूर्य 28/ 9/33 से 22/ 8/34		राहु — चंद्र 22/ 8/34 से 22/ 2/36		राहु — मंगल 22/ 2/36 से 10/ 3/37	
केतु	2/10/29	शुक्र	28/3/31	सूर्य	14/10/33	चंद्र	7/10/34	मंगल	14/3/36
शुक्र	5/12/29	सूर्य	22/5/31	चंद्र	11/11/33	मंगल	8/11/34	राहु	10/5/36
सूर्य	24/12/29	चंद्र	22/8/31	मंगल	30/11/33	राहु	29/1/35	गुरु	1/7/36
चंद्र	25/1/30	मंगल	25/10/31	राहु	18/1/34	गुरु	11/4/35	शनि	1/9/36
मंगल	17/2/30	राहु	7/4/32	गुरु	2/3/34	शनि	7/7/35	बुध	24/10/36
राहु	14/4/30	गुरु	1/9/32	शनि	23/4/34	बुध	23/9/35	केतु	16/11/36
गुरु	4/6/30	शनि	22/2/33	बुध	9/6/34	केतु	25/10/35	शुक्र	19/1/37
शनि	4/8/30	बुध	25/7/33	केतु	28/6/34	शुक्र	25/1/36	सूर्य	8/2/37
बुध	28/9/30	केतु	28/9/33	शुक्र	22/8/34	सूर्य	22/2/36	चंद्र	10/3/37

दशा भोग्य: MAR 4 Y 10 M 7 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: लाहिरी

गुरु — गुरु 10/ 3/37 से 28/ 4/39		गुरु — शनि 28/ 4/39 से 10/11/41		गुरु — बुध 10/11/41 से 16/ 2/44		गुरु — केतु 16/ 2/44 से 22/ 1/45		गुरु — शुक्र 22/ 1/45 से 22/ 9/47	
गुरु	22/6/37	शनि	22/9/39	बुध	5/3/42	केतु	5/3/44	शुक्र	2/7/45
शनि	24/10/37	बुध	1/2/40	केतु	23/4/42	शुक्र	1/5/44	सूर्य	20/8/45
बुध	12/2/38	केतु	24/3/40	शुक्र	9/9/42	सूर्य	18/5/44	चंद्र	10/11/45
केतु	27/3/38	शुक्र	26/8/40	सूर्य	20/10/42	चंद्र	16/6/44	मंगल	6/1/46
शुक्र	5/8/38	सूर्य	12/10/40	चंद्र	28/12/42	मंगल	6/7/44	राहु	30/5/46
सूर्य	14/9/38	चंद्र	28/12/40	मंगल	15/2/43	राहु	26/8/44	गुरु	8/10/46
चंद्र	18/11/38	मंगल	21/2/41	राहु	18/6/43	गुरु	11/10/44	शनि	10/3/47
मंगल	2/1/39	राहु	8/7/41	गुरु	6/10/43	शनि	4/12/44	बुध	26/7/47
राहु	28/4/39	गुरु	10/11/41	शनि	16/2/44	बुध	22/1/45	केतु	22/9/47

गुरु — सूर्य 22/ 9/47 से 10/ 7/48		गुरु — चंद्र 10/ 7/48 से 10/11/49		गुरु — मंगल 10/11/49 से 16/10/50		गुरु — राहु 16/10/50 से 10/ 3/53		शनि — शनि 10/ 3/53 से 13/ 3/56	
सूर्य	6/10/47	चंद्र	20/8/48	मंगल	29/11/49	राहु	25/2/51	शनि	1/9/53
चंद्र	30/10/47	मंगल	18/9/48	राहु	20/1/50	गुरु	20/6/51	बुध	5/2/54
मंगल	17/11/47	राहु	30/11/48	गुरु	4/3/50	शनि	7/11/51	केतु	8/4/54
राहु	30/12/47	गुरु	4/2/49	शनि	28/4/50	बुध	10/3/52	शुक्र	8/10/54
गुरु	8/2/48	शनि	20/4/49	बुध	15/6/50	केतु	30/4/52	सूर्य	2/12/54
शनि	24/3/48	बुध	28/6/49	केतु	5/7/50	शुक्र	24/9/52	चंद्र	3/3/55
बुध	5/5/48	केतु	26/7/49	शुक्र	1/9/50	सूर्य	7/11/52	मंगल	6/5/55
केतु	22/5/48	शुक्र	16/10/49	सूर्य	18/9/50	चंद्र	19/1/53	राहु	18/10/55
शुक्र	10/7/48	सूर्य	10/11/49	चंद्र	16/10/50	मंगल	10/3/53	गुरु	13/3/56

शनि — बुध 13/ 3/56 से 22/11/58		शनि — केतु 22/11/58 से 1/ 1/60		शनि — शुक्र 1/ 1/60 से 1/ 3/63		शनि — सूर्य 1/ 3/63 से 13/ 2/64		शनि — चंद्र 13/ 2/64 से 13/ 9/65	
बुध	30/7/56	केतु	15/12/58	शुक्र	11/7/60	सूर्य	18/3/63	चंद्र	30/3/64
केतु	26/9/56	शुक्र	21/2/59	सूर्य	8/9/60	चंद्र	16/4/63	मंगल	3/5/64
शुक्र	8/3/57	सूर्य	11/3/59	चंद्र	13/12/60	मंगल	6/5/63	राहु	29/7/64
सूर्य	26/4/57	चंद्र	15/4/59	मंगल	19/2/61	राहु	28/6/63	गुरु	15/10/64
चंद्र	17/7/57	मंगल	8/5/59	राहु	10/8/61	गुरु	13/8/63	शनि	15/1/65
मंगल	14/9/57	राहु	8/7/59	गुरु	12/1/62	शनि	7/10/63	बुध	6/4/65
राहु	9/2/58	गुरु	1/9/59	शनि	13/7/62	बुध	26/11/63	केतु	9/5/65
गुरु	18/6/58	शनि	4/11/59	बुध	24/12/62	केतु	16/12/63	शुक्र	14/8/65
शनि	22/11/58	बुध	1/1/60	केतु	1/3/63	शुक्र	13/2/64	सूर्य	13/9/65

दशा भोग्य: MAR 4 Y 10 M 7 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: लाहिरी

शनि — चंद्र 13/ 2/64 से 13/ 9/65		शनि — मंगल 13/ 9/65 से 22/10/66		शनि — राहु 22/10/66 से 28/ 8/69		शनि — गुरु 28/ 8/69 से 10/ 3/72		बुध — बुध 10/ 3/72 से 7/ 8/74	
चंद्र	30/ 3/64	मंगल	6/10/65	राहु	26/ 3/67	गुरु	29/12/69	बुध	13/ 7/72
मंगल	3/ 5/64	राहु	6/12/65	गुरु	12/ 8/67	शनि	24/ 5/70	केतु	3/ 9/72
राहु	29/ 7/64	गुरु	29/ 1/66	शनि	25/ 1/68	बुध	3/10/70	शुक्र	28/ 1/73
गुरु	15/10/64	शनि	2/ 4/66	बुध	20/ 6/68	केतु	26/11/70	सूर्य	11/ 3/73
शनि	15/ 1/65	बुध	29/ 5/66	केतु	20/ 8/68	शुक्र	28/ 4/71	चंद्र	23/ 5/73
बुध	6/ 4/65	केतु	22/ 6/66	शुक्र	11/ 2/69	सूर्य	14/ 6/71	मंगल	14/ 7/73
केतु	9/ 5/65	शुक्र	28/ 8/66	सूर्य	2/ 4/69	चंद्र	30/ 8/71	राहु	24/11/73
शुक्र	14/ 8/65	सूर्य	18/ 9/66	चंद्र	28/ 6/69	मंगल	23/10/71	गुरु	19/ 3/74
सूर्य	13/ 9/65	चंद्र	22/10/66	मंगल	28/ 8/69	राहु	10/ 3/72	शनि	7/ 8/74

बुध — केतु 7/ 8/74 से 4/ 8/75		बुध — शुक्र 4/ 8/75 से 4/ 6/78		बुध — सूर्य 4/ 6/78 से 10/ 4/79		बुध — चंद्र 10/ 4/79 से 10/ 9/80		बुध — मंगल 10/ 9/80 से 7/ 9/81	
केतु	28/ 8/74	शुक्र	24/ 1/76	सूर्य	19/ 6/78	चंद्र	22/ 5/79	मंगल	1/10/80
शुक्र	27/10/74	सूर्य	15/ 3/76	चंद्र	14/ 7/78	मंगल	22/ 6/79	राहु	24/11/80
सूर्य	15/11/74	चंद्र	10/ 6/76	मंगल	2/ 8/78	राहु	8/ 9/79	गुरु	12/ 1/81
चंद्र	15/12/74	मंगल	9/ 8/76	राहु	18/ 9/78	गुरु	16/11/79	शनि	8/ 3/81
मंगल	5/ 1/75	राहु	12/ 1/77	गुरु	29/10/78	शनि	7/ 2/80	बुध	29/ 4/81
राहु	1/ 3/75	गुरु	28/ 5/77	शनि	17/12/78	बुध	19/ 4/80	केतु	20/ 5/81
गुरु	17/ 4/75	शनि	10/11/77	बुध	1/ 2/79	केतु	19/ 5/80	शुक्र	19/ 7/81
शनि	13/ 6/75	बुध	4/ 4/78	केतु	19/ 2/79	शुक्र	14/ 8/80	सूर्य	7/ 8/81
बुध	4/ 8/75	केतु	4/ 6/78	शुक्र	10/ 4/79	सूर्य	10/ 9/80	चंद्र	7/ 9/81

बुध — राहु 7/ 9/81 से 25/ 3/84		बुध — गुरु 25/ 3/84 से 1/ 7/86		बुध — शनि 1/ 7/86 से 10/ 3/89		केतु — केतु 10/ 3/89 से 7/ 8/89		केतु — शुक्र 7/ 8/89 से 7/10/90	
राहु	24/ 1/82	गुरु	13/ 7/84	शनि	4/12/86	केतु	18/ 3/89	शुक्र	17/10/89
गुरु	27/ 5/82	शनि	23/11/84	बुध	21/ 4/87	शुक्र	13/ 4/89	सूर्य	8/11/89
शनि	22/10/82	बुध	18/ 3/85	केतु	18/ 6/87	सूर्य	20/ 4/89	चंद्र	13/12/89
बुध	2/ 3/83	केतु	6/ 5/85	शुक्र	29/11/87	चंद्र	2/ 5/89	मंगल	7/ 1/90
केतु	26/ 4/83	शुक्र	22/ 9/85	सूर्य	18/ 1/88	मंगल	11/ 5/89	राहु	10/ 3/90
शुक्र	29/ 9/83	सूर्य	3/11/85	चंद्र	9/ 4/88	राहु	3/ 6/89	गुरु	6/ 5/90
सूर्य	15/11/83	चंद्र	11/ 1/86	मंगल	5/ 6/88	गुरु	23/ 6/89	शनि	13/ 7/90
चंद्र	1/ 2/84	मंगल	28/ 2/86	राहु	30/10/88	शनि	16/ 7/89	बुध	12/ 9/90
मंगल	25/ 3/84	राहु	1/ 7/86	गुरु	10/ 3/89	बुध	7/ 8/89	केतु	7/10/90

दशा भोग्य: MAR 4 Y 10 M 7 D

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नाम: लाहिरी

केतु — चंद्र 13/ 2/91 से 13/ 9/91	
चंद्र	2/ 3/91
मंगल	12/ 3/91
राहु	14/ 4/91
गुरु	12/ 5/91
शनि	15/ 6/91
बुध	15/ 7/91
केतु	27/ 7/91
शुक्र	2/ 9/91
सूर्य	13/ 9/91

केतु — मंगल 13/ 9/91 से 10/ 2/92	
मंगल	21/ 9/91
राहु	13/ 10/91
गुरु	3/ 11/91
शनि	26/ 11/91
बुध	17/ 12/91
केतु	26/ 12/91
शुक्र	20/ 1/92
सूर्य	27/ 1/92
चंद्र	10/ 2/92

केतु — राहु 10/ 2/92 से 28/ 2/93	
राहु	6/ 4/92
गुरु	27/ 5/92
शनि	27/ 7/92
बुध	20/ 9/92
केतु	12/ 10/92
शुक्र	15/ 12/92
सूर्य	4/ 1/93
चंद्र	6/ 2/93
मंगल	28/ 2/93

केतु — गुरु 28/ 2/93 से 4/ 2/94	
गुरु	12/ 4/93
शनि	6/ 6/93
बुध	23/ 7/93
केतु	13/ 8/93
शुक्र	9/ 10/93
सूर्य	26/ 10/93
चंद्र	24/ 11/93
मंगल	13/ 12/93
राहु	4/ 2/94

केतु — शनि 4/ 2/94 से 13/ 3/95	
शनि	7/ 4/94
बुध	3/ 6/94
केतु	27/ 6/94
शुक्र	3/ 9/94
सूर्य	23/ 9/94
चंद्र	26/ 10/94
मंगल	20/ 11/94
राहु	19/ 1/95
गुरु	13/ 3/95

केतु — बुध 13/ 3/95 से 10/ 3/96	
बुध	3/ 5/95
केतु	24/ 5/95
शुक्र	24/ 7/95
सूर्य	11/ 8/95
चंद्र	11/ 9/95
मंगल	2/ 10/95
राहु	26/ 11/95
गुरु	13/ 1/96
शनि	10/ 3/96

॥ मैत्री चक्र ॥

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	शत्रु	शत्रु	...	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	...	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	...	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	अतिमित्र	सम	शत्रु	अतिमित्र	सम	अतिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
मंगल	सम	सम	...	अतिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र
बुध	सम	सम	शत्रु	...	मित्र	अतिमित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	...	सम	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	...	सम
शनि	अतिशत्रु	अतिशत्रु	सम	सम	शत्रु	सम	...

॥ षड्बल एवं भावबल तालिका ॥

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते हैं तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	57.32	51.86	16.35	13.52	55.37	52.8	57.81
सप्तवर्गज बल	105	97.5	73.12	71.25	75	127.5	41.25
ओजयुग्मरस्यांश बल	15	30	15	15	30	15	15
केन्द्र बल	60	30	15	60	15	15	60
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	237.32	224.36	119.47	159.77	175.37	210.3	174.06
कुल दिग्बल	27.47	19.4	42.87	1.2	19.72	46.74	1.53
नतोन्त बल	25.85	34.15	34.15	60	25.85	25.85	34.15
पक्ष बल	46.87	46.87	46.87	46.87	13.13	13.13	46.87
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	15	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	30	0
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	99.33	0.62	24.42	52.39	58.88	29.73	52.72
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	172.04	141.64	165.45	174.26	157.86	143.7	133.74
कुल चेष्टा बल	44.03	13.13	54.72	14.42	22.59	32.06	57.82
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	-23.64	-9.5	12.6	-25.91	-9.85	-4.01	-7.97
कुल षड्बल	517.22	440.46	412.26	349.48	399.95	471.63	367.77
षड्बल (रूपस)	8.62	7.34	6.87	5.82	6.67	7.86	6.13
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	1.72	1.22	1.37	0.83	1.03	1.43	1.23
सापेक्षिक क्रम	1	5	3	7	6	2	4

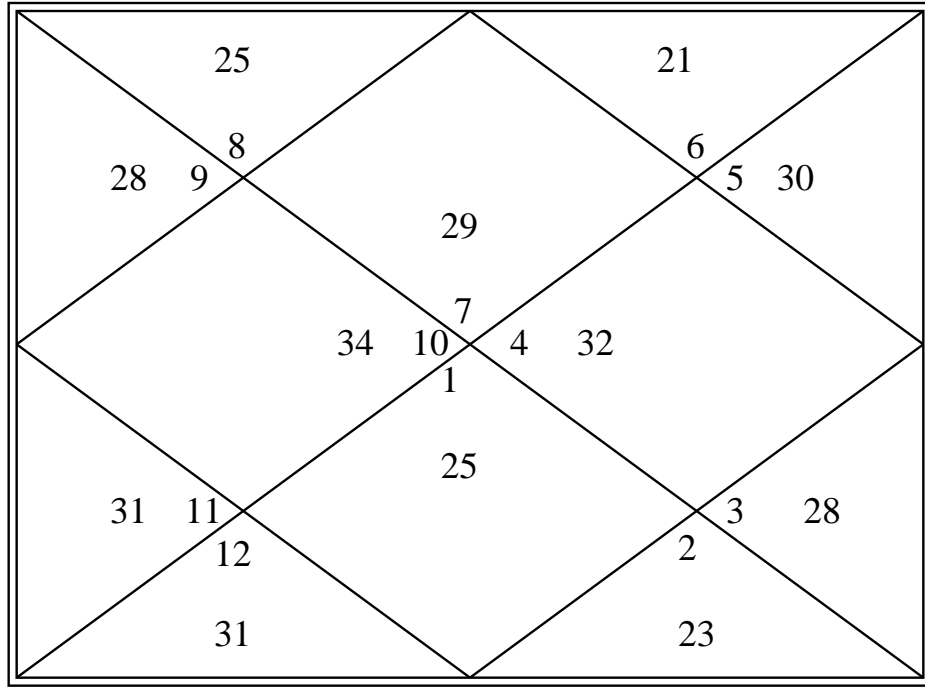
भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	471.63	412.26	399.95	367.77	367.77	399.95	412.26	471.63	349.48	440.46	517.22	349.48
भाव दिग्बल	60	10	10	60	20	40	30	40	20	0	50	50
भावदृष्टि बल	-0.95	-65.56	-6.73	-10.36	42.2	-1.64	-25.01	-10.85	-21.49	-57.96	-30.71	43.76
कुल भाव बल	530.69	356.7	403.22	417.41	429.97	438.31	417.24	500.78	347.98	382.5	536.51	443.24
कुल भाव बल (रूपस में)	8.84	5.94	6.72	6.96	7.17	7.31	6.95	8.35	5.8	6.38	8.94	7.39
सापेक्षिक क्रम	2	11	9	7	6	5	8	3	12	10	1	4

॥ अष्टकवर्ग तालिका ॥

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	4	3	3	5	4	4	5	3	4	4	5	4
चन्द्र	2	4	5	5	3	3	4	5	4	5	5	4
मंगल	3	2	4	4	5	3	5	1	2	3	3	4
बुध	5	5	5	4	5	3	5	4	4	5	3	6
गुरु	6	2	5	6	4	5	3	4	6	6	4	5
शुक्र	3	5	5	4	5	2	3	4	5	6	6	4
शनि	2	2	1	4	4	1	4	4	3	5	5	4
योग	25	23	28	32	30	21	29	25	28	34	31	31

अष्टकवर्ग चार्ट:



॥ प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ॥

सूर्य

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
राहू	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	6
योग	4	3	3	5	4	4	5	3	4	4	5	4	

मंगल

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	5
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
शनि	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	7
राहू	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	5
योग	3	2	4	4	5	3	5	1	2	3	3	4	

गुरु

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	9
चन्द्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
मंगल	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
बुध	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	8
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
शनि	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	4
राहू	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	9
योग	6	2	5	6	4	5	3	4	6	6	4	5	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	3
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	6
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
राहू	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	6
योग	2	2	1	4	4	1	4	4	3	5	5	4	

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	6
चन्द्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
मंगल	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
बुध	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
शनि	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	4
राहू	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
योग	2	4	5	5	3	3	4	5	4	5	5	4	

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
चन्द्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	6
मंगल	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
राहू	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	7
योग	5	5	5	4	5	3	5	4	4	5	3	6	

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	3
चन्द्र	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	5
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	9
शनि	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	7
राहू	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	8
योग	3	5	5	4	5	2	3	4	5	6	6	4	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).